CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध्रुपद-पञ्चाशिका

जिनमें अनेक पद भी स्वरचित, स्वयंकृत स्वर-रचनायुक्त पचास ध्रुपद

‘धातु’ - ‘मातु’ - संयोजक

पं० ऋत्विक सान्याल

INDICA

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

S-3

ध्रुपद-पञ्चाशिका

[जिनमें अनेक पद भी स्वरचित, स्वयंकृत स्वर-रचनायुक्त पचास ध्रुपद]

'धातु' - 'मातु'-संयोजक
पं. ऋत्विक् सान्याल
[सङ्गीत एवम् मञ्चकला सङ्काय
काशी-हिन्दू-विश्वविद्यालय]

INDICA

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

© ऋत्विक् सान्याल
5/6, तुलसी मानस मन्दिर कालोनी,
वाराणसी - 221 005.

ISBN : 978-93-81120-05-7

प्रथम संस्करण
2015

प्रकाशक
Indica Books
D. 40/18, Godowlia
Varanasi - 221 001
India.
E-mail : indicabooksindia@satyam.net.in
web. : www.indicabooks.com

मूल्य : ₹ 375/-

Printed by
Dee Gee Printers
Varanasi. India
Cell : 91+9935408247

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समर्पित है यह सङ्गीत-सुमनाञ्जलि

उन श्रीमातृ-चरणों में,

जिन्होंने श्रीमती रानू सान्याल नाम से

मुझे न केवल विशुद्ध जीवन दिया,

-अपितु-

सङ्गीत-साहित्य-दर्शन-मयी जीवन दृष्टि दी,

सङ्गीत साधना के योग्य कण्ठ दिया तथा

सम्पूर्ण जीवन सङ्गीतमय बन सके ऐसी क्षमता

मुझमें सहज विकसित होने का

सम्बल बनीं वे स्वयम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आशीर्वचन

श्रद्धेया 'दीदी' श्रीमती रानू जी एवं श्रद्धेय श्री बटुक सान्याल जी के सच्चे सुपुत्र तथा मेरे बड़े भाईसाहब उस्ताद ज़िया मोहिउद्दीन डागर के एवं मेरे भी निहायत अज़ीज़ शिष्य, हमारे घराने की गायकी को सचमुच पूरे सही अन्दाज़ में सम्हालने–सँजोने में माहिर होने के नाते डागरबानी–गायकी में हमारे होनहार 'वारिस' चिरञ्जीव (डॉ. प्रो.) ऋत्विक् सान्याल के लिए मेरे दिल की गहराई से 'दुआओं' की फुहार हमेशा बरसती रही है, वही आज उसकी साठवीं बरसगाँठ पर उसे पूरी तरह भरपूर फूला–फला देख कर उसकी सभी तरह की खुशहाली मनाती मेरी 'दुआएँ' बौछार बनी हैं।

खास तौर पर यह देख कर मैं बहुत ही खुश हूँ कि चि. ऋत्विक् (अपने माँ–बाबा तथा गुरु–रूप हम दोनों डागर–भाइयों के दुलारे 'कुट्टुश') की एक किताब – डागर–घराने की गायकी की खास खूबियों को दर्शाती हुई – पचास ध्रुपद–बन्दिशों मे उस के दिए सुर–ताल के साथ तैयार हो चुकी है, जिस में कुछ बन्दिशों के 'पद' भी उसी की रचना हैं।

आज हम सब की श्रद्धेया 'बहिनजी' (प्रो. डॉ. प्रेमलता शर्मा) जो चि. ऋत्विक् की शास्त्र–गुरु भी रहीं – सशरीर हमारे बीच भले नहीं हैं, लेकिन उन्हीं के घर ('आम्नाय') में मनाए जा रहे इस समारोह में वे स्वयं अवश्य विराजमान हैं और अपने पुत्र–समान प्रिय शिष्य की बढ़ोत्तरी पर व उस के प्रशंसनीय कृतित्व में प्रकट हुई 'प्रतिभा' पर अतिशय प्रसन्न होती हुई वे अपनी अनन्त आशिषें बरसा रही हैं – इसे केवल मैं ही नहीं, खुद चि. ऋत्विक् और यहाँ उपस्थित सभी सहृदय लोग – अवश्य महसूस कर रहे हैं।

इस किताब की अहम खासियत यह है कि इस में चि. ऋत्विक् ने केवल सुर–ताल–पद की नई बन्दिशें ही नहीं दी हैं, बल्कि एक ऐसी नई स्वरलिपि ('नोटेशन') भी ईजाद की है जो हमारी गायकी में स्वर के 'उच्चार' की खासियतों, खास 'अन्दाज़ों', स्वरों की अनगिनत छटाओं को भी बहुत–कुछ उजागर कर सके। अभी तक जितने प्रकार की स्वरलिपियाँ बनीं और प्रयोग में लाई जा रही हैं, उन में स्वर लगाने की बारीकियों को दिखाने लायक इतने सङ्केत–चिह्न मौजूद नहीं हैं। उस कमी को महसूस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करके चि. ऋत्विक् सान्याल ने जो यह नई व बहुत बेहतरीन स्वरलिपि की 'उपज' की है – इस के लिए मैं उसे तहे दिल से बधाई देता हूँ। यह स्वरलिपि अपने आप में सङ्गीतजगत् को एक बड़ी अहम देन साबित होगी।

आशा है कि जल्दी ही यह किताब छप कर प्रकाशित हो जाएगी। मौसीकी के असली कद्रदानों (सङ्गीतरसिकों) और सीखना चाहने वालों के लिए यह स्वरलिपि व बन्दिशें बहुत उपयोगी सिद्ध होंगी – यह जाहिर सी बात है। इस के लिए बार–बार 'दुआ' करता हूँ कि अपने सब गुरुजनों की आशाओं पर सब तरह से खरा उतरता हुआ हमारा यह प्यारा 'वारिस' पूरी तरह सेहतमन्द रहते हुए खूब लम्बी उम्र तक सङ्गीतजगत् में अपने साथ पूज्य माँ–बाबा और गुरुजनों का नाम उजागर करता रहे, इसकी बनाई बन्दिशों और गहरी सोच–भरे निबन्धों से भरी बहुत पुस्तके प्रकाशित होती रहें।

(ज़िया फरीद–उद्–दीन डागर)
१२ एप्रिल, २०१३

आम्नाय, धर्मजित नगर, करौंदी,
वाराणसी–२२१००५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लेखकीय

आज संगीत प्रेमियों तथा ध्रुपद की सेवा में 'ध्रुपद-पञ्चाशिका' का यह संस्करण प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष हो रहा हैं। इस संस्करण में स्वयंकृत स्वर-रचनायुक्त 51 ध्रुपद हैं, जिनमें अनेक पद भी स्वरचित हैं। इन रचनाओं को रागों के स्वरालाप-सहित स्व-रचित स्वर-लिपि पद्धति में लिपिबद्ध किया गया है। अखण्ड आकार, कण, आन्दोलन, बलाघात, मींड, गमक आदि को दर्शाते हुए रचनाओं को प्रस्तुत किया गया है, क्योंकि इन सभी का प्रयोग ध्रुपद की डागर-परम्परा में अतिशय ध्यानपूर्वक किया जाता है।

मेरे पूज्य गुरुजी (उस्ताद ज़िया मोहिउद्दीन डागर तथा उस्ताद ज़िया फ़रीद-उद्दीन डागर) से ध्रुपद गायकी की विधिवत् शिक्षा ग्रहण करते समय मुझे नवीन रचना की सृजनशैली पर मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। उसके फलस्वरूप मेरे द्वारा नए ध्रुपदों का निर्माण होने लगा। भारतीय शास्त्रीय संगीत एक वाचिक परम्परा होने से स्वरलिपि का प्रभुत्व कम रहा। परन्तु संगीत-शोध-रचनाओं के संकलन तथा संरक्षण के लिये पदों को स्वरबद्ध करके भविष्यनिधि के रूप में संजोए रखना एक बृहत् दायित्व हे।

उक्त रचनाओं की पृष्ठभूमि हैं - पिता श्री बटुक सान्याल, माँ श्रीमती रानु सान्याल तथा गुरु उस्ताद ज़िया मोहिउद्दिन डागर, उस्ताद ज़िया फ़रीउद्दीन डागर एवं प्रो. प्रेमलता शर्मा जी के अनुशासन और निर्देशन में पाए गए प्रायोगिक एवं सैद्धान्तिक अध्ययन और अनुभव। मेरी कुछ रचनाओं को सभी गुरुजनों ने सुनकर अपने महत्त्वपूर्ण संगीतिक तथा काव्यगत सुझावों से मुझे प्रेरित किया। एक 'रसिक' के नाते मेरी स्वरचित रचनाओं का भावुक श्रवण एवं निष्पक्ष विचार मेरी अर्धांगिनी शुभलक्ष्मी सान्याल से प्राप्त होता रहा है।

इस पुस्तक की तैयारी में अपने माता-पिता एवं गुरुओं के सहयोग के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। समय-समय पर डॉ. प्रेमलता शर्मा जी की अनुजा डॉ. ऊर्मिला शर्मा जी भी धन्यवाद की पात्र हैं जिनके तकनीकी सुझाव, बौद्धिक प्रेरणा, परामर्श एवं सहयोग ने इस कार्य को गति प्रदान की। रचनाओं को व्यवस्थित रूप से लिपिबद्ध करने में मेरी शिष्या मधुच्छन्दा दत्त का सहयोग सराहनीय है। इसके लिए वह सस्नेह साधुवाद की पात्र है। इन रचनाओं के प्रकाशन के प्रयोजन को सार्थक करने के लिए इंडिका प्रकाशन का मैं आभारी हूँ जिनके सहयोग से यह प्रकाशन कार्य निर्बाधित सम्पन्न हुआ। अन्त में मैं परमेश्वर को प्रणाम करता हूँ जिनकी असीम करुणा और कृपा से यह पुस्तक प्रकाशित हुई।

ऋत्विक् सान्याल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्रम-सूची

राग	ताल	पद/स्वर	पृष्ठ सख्या
1. राग भैरव	(चौताल)	तानसेन, ऋत्विक् सान्याल	13
2. राग भैरव	(सूलताल)	तानसेन, ऋत्विक् सान्याल	16
3. राग अहीर भैरव	(चौताल)	ऋत्विक् सान्याल	20
4. राग अहीर भैरव	(सूलताल)	ऋत्विक् सान्याल	22
5. राग रामकली	(तीव्रा)	अज्ञात	24
6. राग विभास	(धमार)	अष्टछाप, ऋत्विक् सान्याल	27
7. राग बैरागी	(चौताल)	तानसेन, ऋत्विक् सान्याल	29
8. राग बैरागी	(सूलताल)	ऋत्विक् सान्याल	33
9. राग बैरागी	(तीव्रा)	ऋत्विक् सान्याल	35
10. राग मियाँ की तोड़ी	(चौताल)	ऋत्विक् सान्याल	37
11. राग मियाँ की तोड़ी	(चौताल)	तानसेन, ऋत्विक् सान्याल	38
12. राग मियाँ की तोड़ी	(सूलताल)	बैजु, ऋत्विक् सान्याल	40
13. राग नागेश तोड़ी	(तीव्रा)	ऋत्विक् सान्याल	43
14. राग बिलासखानी तोड़ी	(चौताल)	तानसेन	46
15. राग भूपाल तोड़ी	(सूलताल)	तानसेन	48
16. राग भैरवी	(सूलताल)	तानसेन	50
17. राग जौनपुरी	(चौताल)	बैजु, ऋत्विक् सान्याल	52
18. राग शुद्धसारङ्ग	(धमार)	ऋत्विक् सान्याल	54
19. राग पटदीप	(चौताल)	तानसेन, ऋत्विक् सान्याल	56
20. राग पटदीप	(सूलताल)	ऋत्विक् सान्याल	58
21. राग भीमपलासी	(सूलताल)	ऋत्विक् सान्याल	60
22. राग हंसकिङ्किणी	(सूलताल)	ऋत्विक् सान्याल	64
23. राग मुलतानी	(सूलताल)	ऋत्विक् सान्याल	66
24. राग मुलतानी (श्लोक)	(सूलताल)	शङ्कराचार्य , ऋत्विक् सान्याल	68
25. राग श्रुतिवर्द्धनी	(सूलताल)	ऋत्विक् सान्याल	71
26. राग मारवा	(सूलताल)	ऋत्विक् सान्याल	73

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

27. राग पूरिया	(सूलताल)	ऋत्विक् सान्याल	75
28. राग यमन	(चौताल)	तानसेन, ऋत्विक् सान्याल	77
29. राग यमन	(सूलताल)	तानसेन, ऋत्विक् सान्याल	79
30. राग यमन	(तीव्रा)	ऋत्विक् सान्याल	81
31. राग सरस्वती	(सूलताल)	ऋत्विक् सान्याल	83
32. राग छायानट	(सूलताल)	ऋत्विक् सान्याल	85
33. राग केदार	(सूलताल)	ऋत्विक् सान्याल	87
34. राग केदार	(तीव्रा)	ऋत्विक् सान्याल	89
35. राग शंकरा	(मत्तताल)	तुलसीदास. ऋत्विक् सान्याल	92
36. राग शंकरा	(चौताल)	विवेकानन्द, ऋत्विक् सान्याल	94
37. राग शंकरा	(सूलताल)	विवेकानन्द, ऋत्विक् सान्याल	96
38. राग बिहाग	(सूलताल)	तानसेन, ऋत्विक् सान्याल	98
39. राग चलनाट	(चौताल)	बख्शु , ऋत्विक् सान्याल	100
40. राग भिन्नषड्ज	(सूलताल)	ऋत्विक् सान्याल	102
41. राग बागेश्री	(चौताल)	बैजु, ऋत्विक् सान्याल	104
42. राग बागेश्री	(सूलताल)	ऋत्विक् सान्याल	106
43. राग बागधीश्वरी	(सूलताल)	विवेकानन्द, ऋत्विक् सान्याल	108
44. राग आभोगी	(धमार)	ऋत्विक् सान्याल	110
45. राग चन्द्रकौंस	(सूलताल)	ऋत्विक् सान्याल	112
46. राग गाङ्गेयभूषणी	(चौताल)	ऋत्विक् सान्याल	114
47. राग वर्द्धनी	(चौताल)	ऋत्विक् सान्याल	116
48. राग दरबारी	(चौताल)	तानसेन,ऋत्विक् सान्याल	118
49. राग दरबारी	(सूलताल)	ऋत्विक् सान्याल	121
50. राग मियाँ की मल्हार	(चौताल)	ऋत्विक् सान्याल	123
51. राग ललित	(सूलताल)	ऋत्विक् सान्याल	126

**

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पद एवं स्वरावली में प्रयुक्त विशिष्ट चिह्न

1. \\, / अथवा ‿ = कण (स्पर्श) स्वर ऊपर एवं नीचे से मींड के साथ।

जैसे म\\ग (म से ग॒), रे/म (रे से म) अथवा

नि॒‿सा (नि॒ से सा)।

2. ⌐ = कण ¼स्पर्श½ स्वर ऊपर से नीचे, जैसे ध⌐म (ध से म)।

3. ∼ = लघु आन्दोलन, जैसे ग रे॒∼सा।

4. ⌒ = सूक्ष्म आन्दोलन, जैसे (ध)⌒।

5. ↗ एवं ↘ = आरोहात्मक एवं अवरोहात्मक लहक (चाबुक की भाँति) स्वर जैसे

रे॒↗म एवं म↘रे॒।

6. ⌒ = दो स्वरों का मसृण योग (मींड की भाँति), जैसे ध⌒प म।

7. ‿ = एक मात्रा में निहित स्वर गुच्छ जैसे पमगरे॒।

8. ∧ = दो स्वरों का बलाघात (ऊपर की स्वर से), जैसे नि∧सां नि।

9. ∨ = दो स्वरों का बलाघात (नीचे की स्वर से), जैसे ग∨रे ग।

10. ᴧᴧᴧ∟ = विशिष्ट आन्दोलित स्वर का अवरोहण कर नीचे की स्वर का कर्षण, जैसे ग रेᴧᴧᴧसा।

11. ⁄‾‾W‾‾ = अखण्ड आकार (आधार स्वर सा की प्रतिष्ठा), जैसे (ध)⁄रे (ध)(ध)W सा

12. ʃ = आरोहात्मक सूक्ष्म मींड, जैसे (प)ʃसा

13. ⁀ = मींड जैसे प⁀रे॒।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

14. · (अवग्रह) = पहले अक्षर की मात्रा बढ़ाना।

15. – (छोटी –) = पहले स्वर की मात्रा बढ़ाना।

16. •– ऊपर • = तार सप्तक।

17. •– नीचे • = मन्द्र सप्तक।

18. - - (नीचे पड़ी रेखा) = कोमल स्वर।

19. । – (ऊपर खड़ी रेखा) = तीव्र स्वर।

20. × = ताल में 1 (सम) पहली ताली।

21. 2,3,4 = दूसरी, तिसरी, चौथी ताली।

22. O = खाली का चिह्न।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरव

स्वरालाप :

(ध॒) रे॒ (ध॒) (ध॒) सा → सा ऩि ध॒ , ऩिऩि ध॒ सा ,

रे॒ ^ग^रे॒ सा - रे॒ ग , ग - म~ग~ प~म~ ^ग^रे॒ सा ।

राग भैरव चौताल

महादेव महाकाल धुर्जटी शूली
पंचवदन प्रसन्न नेत्र।
परमेश्वर परात्पर महाजोगी महेश्वर
परमपुरुष प्रेममय पराशान्ति दाता।।
सरितागण भिन्न भिन्न पंथ जैसे आवत
सिन्धु पाई रहत मगन।
तानसेन कहे तैसे भगत भिन्न भिन्न मुरती
उपासत एक ही ब्रह्मा आवत।।

(तानसेन)

स्थायी

नि	नि	सां	ध॒	-	प	म	ग	^मगप^म म	रे॒	सा	सा
म	हा	S	दे	S	व	म	हा	S	का	S	ल
X		0		2		0		3		4	

सा	ध॒	ध॒	ऩि	सा	सा	सा	ग	म	म	^ग^रे॒	सा
धु	र्	S	ज	S	टि	शू	S	S	S	ली	S
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा	ग	ग	म	म	म	प	ग	(मगप)म	(ग)रे	-	सा
पं	ऽ	च	व	द	न	प्र	स	न्न	ने	ऽ	त्र
X		0		2		0		3		4	

अन्तरा

ग	म	(नि)ध	नि	नि	(नि)ध	नि	सां	-सां	सां	-	सां
प	र	मे	ऽ	श्व	र	प	रा	ऽत्	प	ऽ	र
X		0		2		0		3		4	

सां	(नि)ध	-	(नि)ध	-	(नि)ध	(नि)ध	(ध)सां	(नि)रें	सां	-	सां
म	हा	ऽ	जो	ऽ	गी	म	हे	ऽ	श्व	ऽ	र
X		0		2		0		3		4	

सां	गं	मं	(गं)रें	(गं)रें	सां	सां	-नि	(नि)(रें)सां	(नि)ध	-	प
प	र	म	पु	रु	ष	प्रे	ऽ	म	म	ऽ	य
X		0		2		0		3		4	

सां	नि	(नि)ध	पम	प	म	ग	(मगप)म	(ग)रे	(ग)रे	सा	-
प	रा	ऽ	शाऽ	ऽ	न्ति	दा	ऽऽ	ऽ	ऽ	ता	ऽ
X		0		2		0		3		4	

संचारी

सा	सा	(ग)रे	-	सा	सा	सा	(ऩि)ध	(ऩि)ध	ऩि	सा	सा
स	रि	ता	ऽ	ग	ण	भि	ऽ	न्न	भि	ऽ	न्न
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा	-ऩि	(ऩि)(रें)सा	(ऩि)ध	-	प	म़	(ऩि)ध	(सा)ऩि	रे	सा	(ऩि)सा
पं	S	थ	जै	S	से	आ	S	व	S	त	S
X		0		2		0		3		4	

सा	ग	म	(नि)ध	-	प	म	ग	(मगप)म	(ग)रे	(ग)रे	सा
सिन्	S	धु	पा	S	ई	र	ह	तS	म	ग	न
X		0		2		0		3		4	

आभोग

सा	सां	सां	सां	-	सां	(रें)सां	(नि)ध	सां	नि	सां	सां
ता	S	न	से	S	न	क	हे	S	तै	S	से
X		0		2		0		3		4	

सां	(गं)रें	(गं)रें	गं	रें	सां	सां	-नि	(नि)(रें)सा	(नि)ध	प	म
भ	ग	त	भि	S	न्न	भि	SS	न्न	मु	र	ति
X		0		2		0		3		4	

प	(धु)सां	(नि)रें	सां	-	सां	गं	रें	रें	सां	-	-
उ	पा	S	स	S	त	ए	S	क	ही	S	S
X		0		2		0		3		4	

सां	(नि)(रें)सां	(नि)ध	ध	प	(म)प	म	ग	(मगप)म	(ग)रे	-	सा
ब्र	S	S	ह्	म	S	आ	S	SS	व	S	त
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरव सूलताल

एही सप्त सुर तीन ग्राम
इक्कीस मुर्च्छना गीत छन्द धुवा
माठा प्रबन्ध त्रेवट तान।
आरोही अवरोही अस्थायी संचारी
वादी विवादी सम्वादी अनुवादी जान।।
षड़ज रिखव गन्धार मध्यम
पंचम धैवत निषाद तान आन
सा रे ग म प ध नि सां
नि ध प म ग रे सा ।
तानसेन कह्यो ग्रन्थ प्रमाण ।।

(तानसेन)

स्थायी

ग	म	(म नि)ध॒	-	प	-म	प	म	-	म
ए	S	ही	S	स	Sप	त	सु	S	र
X		0		2		3		0	

ग	-(म)	(ग)प	म	(ग)रे॒	-	(ग)रे॒	-	सा	-
ती	S	S	न	ग्रा	S	S	S	म	S
X		0		2		3		0	

सा	ध॒	-	ऩि	सा	-	-ऩि	रे॒	सा	-
ए	की	S	स	मू	S	Sर्	छ	ना	S
X		0		2		3		0	

ऩि	सा	ग	म	ध॒	-	ध॒	ध॒	-	प
गी	S	त	S	छ	Sन्	द	धु	S	वा
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग	म	ध	-	↘ध	-	↘ध	नि	-	नि
मा	ऽ	ऽ	ऽ	ठा	ऽ	प्र	बन्	ऽ	ध
X		0		2		3		0	

सा	-नि	ध	प	म	ग	रे	-	सा	-
त्रे	ऽ	व	ट	ता	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ
X		0		2		3		0	

अन्तरा

ग	म	निध	-	नि	सां	नि	ध	प	म
आ	ऽ	रो	ऽ	ही	अ	व	रो	ऽ	ही
X		0		2		3		0	

ग	म	निध	-	नि	सां	नि	रें	-	सा
अ	स्	था	ऽ	यी	स	ञ्	चा	ऽ	री
X		0		2		3		0	

सां	रें	गं	मं	गंरें	-	गंरें	-	सा	-
वा	ऽ	दी	वि	वा	ऽ	ऽ	ऽ	दी	ऽ
X		0		2		3		0	

सां	-	निध	-	ध	-	सां	-	सां	-
सं	ऽ	ऽऽ	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ	दी	ऽ
X		0		2		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां	नि	ध	प	म	ग	प	म	-	म
अ	नु	वा	ऽ	ऽ	ऽ	दी	जा	ऽ	न
X		0		2		3		0	

संचारी

सा	सा	सा	-	रे	-	-	रे	-	रे
ष	ड	ज	ऽ	रि	ऽ	ऽ	ख	ऽ	भ
X		0		2		3		0	

ग	-	ग	-	ग	म	-	म	-	म
गन्	ऽ	धा	ऽ	र	म	ऽ	ध्य	ऽ	म
X		0		2		3		0	

प	-	प	प	ध	-	-	ध	-	ध
पं	ऽ	च	म	धै	ऽ	ऽ	व	ऽ	त
X		0		2		3		0	

नि	नि	-	नि	सां	नि	ध	प	म	म
नि	षा	ऽ	द	ता	ऽ	न	आ	ऽ	न
X		0		2		3		0	

सा	रे	ग	म	प	ध	नि	सां	-	नि
सा	रे	ग	म	प	ध	नि	सा	ऽ	नि
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध॒	प	म	ग	रे॒	-	रे॒	-	सा	-
ध	प	म	ग	रे	ऽ	ऽ	ऽ	सा	ऽ
X		0		2		3		0	

सा	-	सां	-	सां	-	-	रें	-	सां
ता	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ	से	ऽ	न
X		0		2		3		0	

सां	नि	ध॒	प	म	ग	प	म	-	म
क	ह्यो	ग्रन्	ऽ	थ	ऽ	प्र	मा	ऽ	ण
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग अहीरभैरव

स्वरालाप : सा ध़ नि़ रे सा, सा रे ग म प ध नि रें सां, सां नि ध प ध ग म,

ग (प)म (ग)रे —— सा ।

राग अहीरभैरव चौताल

एक रदन लम्बोदर
मुषकवाहन सिग्धसदन
गिरिजा सुत गणेश ।
गजानन विघ्नहरण
मुक्तिदाता प्रसन्नवदन
गणपति गति सुत महेश ।।

(ऋत्विक् सान्याल)

स्थायी

रे	रे	ग	रे	सा	सा	सा	(नि)प़े	ध़	नि	सा	सा
ए	ऽ	क	र	द	न	ल	म्बो	ऽ	द	ऽ	र
X		0		2		0		3		4	

सा	रे	ग	म़	म	म	ध	ध	प	(ध)ग	म	म
मु	ष	क	वा	ह	न	सि	ऽ	द्ध	स	द	न
X		0		2		0		3		4	

नि	ध	प	म	(ग)रे	रे	(ग)रे	(म)ग	(प)म	रे	-	सा
गि	रि	जा	ऽ	सु	त	ग	ऽ	ऽ	णे	ऽ	श
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

सां	(नि)प	ध	(सां)नि	सां	सां	ध	नि	रें	रें	सां	सां
ग	जा	ऽ	न	ऽ	न	वि	ऽ	घ्न	ह	र	ण
X		0		2		0		3		4	

सां	गं	मं	रें	रें	सां	रें	सांनि	(नि)सां	नि	ध	प
मु	ऽ	क्ति	दा	ऽ	ता	प्र	सन्	न	व	द	न
X		0		2		0		3		4	

रें	सां	नि	ध	प	म	गरे	मग	पम	(ग)रे	रे	सा
ग	ण	प	ति	ग	ति	सुऽ	तऽ	मऽ	हे	ऽ	श
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग अहीरभैरव सूलताल

भानु उदय भयो
जीव-जन्तु सब जागो
दिगन्त व्यापि
ऊषा किरणमयी।
काश्यप महाद्युति
पापविनाशी जग उजियारा
सूरज को नमन करो।।

(ऋत्विक् सान्याल)

स्थायी

म	ग	रे	सा	(नि)ध	ध़	नि	रे	सा	सा
भा	ऽ	नु	ऽ	उ	द	य	भ	यो	ऽ
X		0		2		3		0	

सा	रे	ग	ग	रे	ग	ग	म	-	म
जी	व	जन्	ऽ	तु	स	ब	जा	ऽ	गो
X		0		2		3		0	

ग	मध	ध	नि	ध	ध	प	-	म	म
दि	गन्	ऽ	त	व्या	ऽ	ऽ	ऽ	पि	ऽ
X		0		2		3		0	

म	ग	रे	सा	नि	नि	रे	ग	म	म
ऊ	ऽ	षा	ऽ	कि	र	ण	म	यी	ऽ
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

म	म	ध	नि	रें	रें	सांनि	सां	सां	सां
का	ऽ	श्य	प	म	हा	ऽऽ	द्यु	ऽ	ति
X		0		2		3		0	

सां	रें	गं	रें	गं	-	रें	-	सां	-
पा	ऽ	प	वि	ना	ऽ	ऽ	ऽ	शी	ऽ
X		0		2		3		0	

सां	रें	नि	सां	नि	ध	म	नि	-	-
ज	ग	ऽ	जि	या	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ
X		0		2		3		0	

सां	नि	ध	प	ग	रे	ग	प	म	-
सू	र	ज	को	न	म	न	क	रो	ऽ
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग रामकली तीव्रा

स्वरालाप : सा ग म प - ,म॑ प ध नि ध प - , म॑ प प ध नि सां नि रें - सां, रें सां नि सां नि ध प -, ध म॑ प - प ग म प म ग रे सा ।

राग रामकली तीव्रा

भोरे सुमिर हरि के नाम मन
जासों चित हित होत जान ।
झुटी जग माया में समाया
तन मन धन स्वारथ में गवाया
अब तो श्री हरि वचन मान ।।

(अज्ञात)

स्थायी

					म॑	प
					भो	रे
X			2		3	

ध	नि	ध	प	प	ग	म
सु	मि	र	ह	रि	के	ऽ
X			2		3	

प	म॑	प	ध	प	म॑	प
ना	ऽ	म	म	न	भो	रे
X			2		3	

ध	नि	ध	प	प	ग	म
सु	मि	र	ह	रि	के	ऽ
X			2		3	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प	ग	म	ग<u>रे</u>	⁀	सा	-
ना	S	म	म	S	न	S
X			2		3	

सा	-	ऩि <u>ध</u>	ऩि	ऩि	सा	सा
जा	S	सोंS	चि	त	हि	त
X			2		3	

सा	<u>ध</u>	<u>ध</u>	<u>ध</u>	प	मं	प
हो	S	त	जा	न	भो	रे
X			2		3	

अन्तरा

प	-	प	<u>ध</u>	<u>ध</u>	<u>ध</u> नि	-
झु	S	टी	ज	ग	मा	S
X			2		3	

सां	सांनि	<u>रें</u>	सां	-	सां	-
या	मेंS	स	मा	S	या	S
X			2		3	

मं	गं	<u>रें</u>	सां	- नि	<u>रें</u>	सां
त	न	म	न	S	ध	न
X			2		3	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि ध	-	-	मं	ध	प	ऽ
स्वा	ऽ	ऽ	र	थ	में	ऽ
X			2		3	

म	ग	म	प	मं	ध	प
ग	ऽ	ऽ	वा	ऽ	या	ऽ
X			2		3	

मं	मं	प	पध	– ध नि	ध	प
अ	व	तो	श्रीऽ	ऽऽ	ह	रि
X			2		3	

ग	ग	म	प	प	मं	प
व	च	न	मा	न	भो	रे
X			2		3	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग विभास

स्वरालाप : सा रे ग रे सा –, ग रे ग प ध~प, ग प ध~सां – , रें गं रें~सां ~सां ध~प ग प ध प ग प ग रे – सा ।

राग विभास धमार

अरी चलि नवल किशोरी गोरी भोरी,
होरी खेलन जाँईं।
जनु यहाँ रुप ज्योति जग मग सी,
पवन लगें झकुराईं।।

(अष्टछाप)

स्थायी

										ग	रे	सा	सा
										अ	री	च	लि
X					2		0			3			

ध	ध	प	प	ग	प	धप	ग	रे	सा	सा	ध	रे	सा
न	व	ल	कि	शो	ऽ	रीऽ	गो	ऽ	री	भो	ऽ	ऽ	री
X					2		0			3			

प	ग	प	धसां	ध	प	ग	रे	सा	–				
हो	ऽ	री	खेऽ	ल	न	जाँ	ऽ	ईं	ऽ				
X					2		0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

										प	ग	प	ध
										ज	नु	य	हाँ
X					2		0			3			

^ध सां	सां	सां	सांरें	रें	सां	सांग	रें	सां	सां	ध	धरेंसां–	ध	प
रू	S	प	ज्यो	S	ति	ज	ग	म	ग	सी	SSSS	S	S
X					2		0			3			

रें	सां	ध	प	ग	ध	प	ग	रें	सा				
प	व	न	ल	गें	झ	कु	रा	S	ई				
X					2		0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बैरागी

स्वरालाप : सा रे रे म प नि सां रें - सां नि सां नि सां - रें सां नि सां – नि प म, म प नि म नि प - , नि प म प रे - सा नि नि सा-।

राग बैरागी चौताल

ए मन तु जो अपनो सुख चाहत हों
घड़ि घड़ि पल पल छिन छिन सुमिर ले श्रीराम नाम।
जो जग जप-तप नेम धर्म ब्रत संजम
ज्ञान ध्यान गहे दृढ हरि चरणन विस्राम ।।
और उपाव नाही कलि जुग में कृष्णकृष्ण कहत होवे आराम ।
तानसेन प्रभू की करण शरण गही लें
जा सों पावे वैकुण्ठ धाम ।।

(तानसेन)

स्थायी

								नि	-पम	-रे	-सा
								ए	SSS	Sम	Sन
X		0		2		0		3		4	

रे	-	सा	-	निप़	नि	सा	-	सा	रे	पम	पम
तु	S	जो	S	अS	प	नो	S	सु	ख	चा	S
X		0		2		0		3		4	

नि	पम	प	-	म	प	नि	नि	प	नि	सां	सां
ह	त	हों	S	घ	ड़ि	घ	ड़ि	प	ल	प	ल
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

X		0		2		0		3		4	
रें	सां	नि	प	नि	प	म	प(नि)	पम	रे	रे	नि
छि	न	छि	न	सु	मि	र	ऽ	ले	ऽ	श्री	ऽ

X		0		2		0		3		4	
नि	प	म	प	म	मरे	सानि	सा				
रा	ऽ	ऽ	म	ना	ऽऽ	ऽ	म				

अन्तरा

X		0		2		0		3		4	
								म	प	नि	प
								जो	ऽ	ज	ग

X		0		2		0		3		4	
सां	सां	सां	सां	सां	रें	मं	पंमं	-रें	सां	रें	रेंसां
ज	प	त	प	ने	ऽ	म	धऽ	ऽर	म	ब्र	त

X		0		2		0		3		4	
नि	प	म	म	म	निप	नि	निप	सांनि	सां	रें	-
सं	ऽ	ज	म	ज्ञा	ऽ	न	ध्या	ऽ	न	ग	ऽ

X		0		2		0		3		4	
सां	-	नि	सां	प	नि	म	प	म	रे	रे	-नि
हे	ऽ	दृ	ढ़	ह	रि	च	र	ण	न	वि	ऽस्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि	प	म	प	म	मरे	सानि	सा				
रा	S	S	S	S	S	S	म				
X		0		2		0		3		4	

संचारी

								म	रेसा	–निप़-नि	
								औ	SS	Sर	Sउ
X		0		2		0		3		4	

सा	–(नि)	सा	रे	-	रेसा	सा	रे	रेपम	पम	प(म)	प
पा	SS	व	ना	S	ही	क	लि	जु	ग	में	S
X		0		2		0		3		4	

म	-प	नि	नि	-प	म	रेप	म	रे	निरे	रे	नि
कृ	Sष	ण	कृ	Sष	ण	क	ह	त	S	हो	S
X		0		2		0		3		4	

नि	प	म	मप	म	मरे	रेसानि	सा				
वे	S	S	आ	रा	S	S	म				
X		0		2		0		3		4	

आभोग

सा	सां	सां	सां	-	सां	निप	सांनि	निरें	-	सां	-
ता	S	न	से	S	न	प्र	S	भू	S	की	S
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां	रें	मं	पंमं	रें	सां	रें	सांनि	सां	नि	प	म
क	र	न	शऽ	र	न	ग	हिऽ	ऽ	ले	ऽ	ऽ
X		0		2		0		3		4	

म	प	सांनि	सांनि	सां	(नि)सां	नि	प	म	मरे	रे	नि
जा	ऽ	ऽऽ	ऽ	सौं	ऽ	पा	ऽ	वे	ऽ	वै	ऽ
X		0		2		0		3		4	

नि	प	म	प	म	मरे	सानि	सा				
कुं	ऽ	ऽ	ठ	धा	ऽ	ऽ	म				
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बैरागी सूलताल

नमामि शंकर आचार्य प्रवर,
वेदान्त विज्ञान महिमा कर प्रसार।
समाधि प्रज्ञामे श्रुति स्मृति न्याय
बहुत्व प्रतीति माया में, आत्मा
नित्य निर्विकार ।।

(ऋत्विक् सान्याल)

स्थायी

नि	प	म	म	रे	-	(सा)नि	सा	-	सा
न	मा	S	मि	शं	S	S	क	S	र
X		0		2		3		0	

नि	-	नि	प़	नि	रे	-	रे	सा	सा
आ	S	चा	S	र्य	प्र	S	व	S	र
X		0		2		3		0	

सा	रे	म	-	प	प	म	नि	प	प
वे	S	दा	S	न्त	वि	S	ज्ञा	S	न
X		0		2		3		0	

सां	नि	प	म	रे	म	रे	सा	-	सा
म	हि	मा	S	क	र	प्र	सा	S	र
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

सा	सा	सां	सां	नि	प	नि	रें	सां	-
स	मा	ऽ	धि	प्र	ऽ	ज्ञा	ऽ	मे	ऽ
X		0		2		3		0	

नि	सां	-	मं	रें	सां	नि	प	-	प
श्रु	ति	ऽ	स्मृ	ति	न्या	ऽ	ऽ	ऽ	य
X		0		2		3		0	

रें	सां	-	नि	प	नि	प	-	म	-
ब	हु	ऽ	त्व	ऽ	प्र	ती	ऽ	ति	ऽ
X		0		2		3		0	

सा	रे	म	-	म	प	प	-	प	-
मा	ऽ	या	ऽ	में	आ	त्	मा	ऽ	ऽ
X		0		2		3		0	

प	-	म	-	रे	म	रे	सा	-	सा
नि	ऽ	त्य	ऽ	नि	र्	वि	का	ऽ	र
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बैरागी तीव्रा

हर हर शम्भू महादेव
शंकर पिनाकपाणि ।
नीलकण्ठ जय महाकाल
वृषभ वाहन गले फणिमाल ।।

(ऋत्विक् सान्याल)

स्थायी

			नि	प	नि	रें
			ह	र	ह	र
X			2		3	
सां	-	सां	नि	प	म	प
शम्	S	भू	म	S	हा	S
X			2		3	
म	रे	सा	सा	रे	म	प
दे	S	व	शं	S	क	र
X			2		3	
नि	प	म	प	नि	सां	सां
पि	S	S	ना	S	S	क
X			2		3	
रें	-	सां				
पा	S	णि				
X			2		3	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

			म	प	नि	प
			नी	S	S	ल
X			2		3	

नि	सां	सां	नि	सां	रें	मं
कं	S	ठ	ज	य	म	हा
X			2		3	

रें	-	सां	रें	सां	नि	सां
का	S	ल	वृ	ष	भ	S
X			2		3	

नि	प	म	प	नि	प	म
वा	ह	न	ग	ले	फ	णि
X			2		3	

रे	-	सा				
मा	S	ल				
X			2		3	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मियाँ की तोड़ी

स्वरालाप : सा ध ऩि सा रे – ग रे – सा, सा रे ग मं ध प - , मं ध नि सां रें गं रें सा नि ध – मं ध नि ध प – मं ध मं ग मं रे – ग रे – सा ।

राग मियाँ की तोड़ी चौताल

जोगी शिव शंकर भोलानाथ दिगम्बर ।
त्रिलोचन देवादिदेव ध्यान में रहत मगन ।।

(ऋत्विक् सान्याल)

स्थायी

ध	मं	ध	निध	प	प	ध	मं	ग	रे	सा	सा
जो	S	गी	शि	S	व	शं	S	S	क	S	र
X		0		2		0		3		4	

सा	निध	ध	सा	-	सा	गरे	रे-	ग	मंग रे	सा	सा
भो	ला	S	ना	S	थ	दि	गम्	S	ब	S	र
X		0		2		0		3		4	

अन्तरा

ध	मंग	धमं	ध	मं	ध	सां	सां	सां	सांनि	रें	सां
त्रि	लो	S	च	S	न	दे	वा	दि	देS	S	व
X		0		2		0		3		4	

गंरें	गं	रें	सां	निध	मंध	नि	ध	मं	ग	रे	सा
ध्या	S	न	मे	SS	SS	र	ह	त	म	ग	न
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मियाँ की तोड़ी चौताल

अब मोरे राम राम कहिये टेरो ।
मेरो मन लाग्यो उन ही सों
सीतापति पद हेरो ।। (तानसेन)

स्थायी

								ध	मंग	vरे–सा	--
								अ	बS	मोS	रेSS
X		0		2		0		3		4	

रे	-	रेग	रे	-	-	सा	-	सा	निध	vधम-	ध--
रा	S	म	रा	S	S	म	S	क	SS	Sहि	SS
X		0		2		0		3		4	

सा	साऩि	रे	-	मंग	पमं	ध	धप				
टे	SS	S	S	रोS	SS	S	S				
X		0		2		0		3		4	

अन्तरा

								ध	मंग	-म	ध-
								मे	रोS	Sम	नS
X		0		2		0		3		4	

सां	-	सां	-	निध	नि	रें	रें	सां	सां	रें	गं
ला	S	ग्यो	S	ऊ	न	हि	S	सों	S	सी	S
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रें	रें	सां	सां	नि	सां	निध	ध	मं	ध	नि	ध
ता	S	S	S	प	S	तिS	S	प	S	द	S
X		0		2		0		3		4	

प	पमं	ध	ध	रे	ग	रे	सा				
हे	SS	S	S	रो	S	S	S				
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मियाँ की तोड़ी सूलताल

पंछिन मनि गरुड़
गज मनि ऐरावत
दिन मनि दिवाकर।
गीत मनि संगीत
वन मनि वृन्दावन
तरु मनि कल्पतरु।।
नर मनि नारायण
तारा मनि ध्रुव
तीर्थ मनि गंगा
देव मनि शंकर।
नारी मनि उर्वसी
पुष्प मनि कमल
दास बैजु मनि मुख मुरलीधर।।

(बैजु)

स्थायी

सां	–	सां	सां	(नि)ध	ध	ध	(नि)म'	–	ध
पं	S	छि	न	म	नि	ग	रु	S	ड़
X		0		2		3		0	

म'	म'	ध	ध	नि	ध	प	–	प	प
ग	ज	म	नि	ऐ	S	रा	S	व	त
X		0		2		3		0	

म'	ध	म'	ग	(ग)रे	रे	ग	रे	सा	सा
दि	न	म	नि	दि	वा	S	क	S	र
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

सां	–	(नि)मं	ध	नि	नि	–	सा	–	सा
गी	ऽ	त	म	नि	सं	ऽ	गी	ऽ	त
x		0		2		3		0	

नि	नि	सां	सां	(गं)रें	–	रें	गं	रें	सा
व	न	म	नि	वृं	ऽ	दा	ऽ	व	न
x		0		2		3		0	

सां	सां	(नि)मं	ध	सां	–	नि	रें	सां	सां
त	रु	म	नि	क	ऽ	ल	प	त	रु
x		0		2		3		0	

संचारी

ऩि	ऩि	सा	सा	(ग)रे	–	रे	ग	रे	सा
न	र	म	नि	ना	ऽ	रा	ऽ	य	ण
x		0		2		3		0	

सा	–	(ऩि)म़	ध़	ऩि	ऩि	–	सा	–	सा
ता	ऽ	रा	ऽ	म	नि	ऽ	ध्रु	ऽ	व
x		0		2		3		0	

(मं)ग	–	मं	मं	ध	ध	–	प	–	–
ती	ऽ	र्थ	म	नि	गं	ऽ	गा	ऽ	ऽ
x		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म॑	ध	म॑	ग	रे	–	ग	रे	सा	सा
दे	व	म	नि	शं	ऽ	ऽ	क	ऽ	र
X		0		2		3		0	

आभोग

सा	–	सां	–	सां	सां	(सां)नि	रें	सां	सां
ना	ऽ	री	ऽ	म	नि	ठ	र्	व	सी
X		0		2		3		0	

(नि)ध	–	नि	सां	(गं)रें	(गं)रें	गं	रें	सां	सां
पु	ऽ	ष्प	म	नि	क	ऽ	म	ऽ	ल
X		0		2		3		0	

सां	–	(नि)म॑	ध	रें	–	सां	–	–	–
दा	ऽ	ऽ	स	वै	ऽ	जू	ऽ	ऽ	ऽ
X		0		2		3		0	

नि	रें	नि	ध	म॑	ग	रे	ग	रे	सा
म	नि	मु	ख	मु	र	ली	ऽ	ध	र
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग नागेश तोड़ी

स्वरालाप : सा –ध सा रे ग रे सा, सा रे ग म ध –, म सां ध सां –, रें सां ध सां ध म – , प ग रे ग रे सा ।

राग नागेश तोड़ी तीव्रा

ज्ञान कर्म के योग, भक्ति से पायो।
जन कल्याण, समरस लायो।।
व्रह्मज्ञान सब निराकार।
करुणा सिन्धु भव निस्तार।।
(ऋत्विक् सान्याल)

स्थायी

सा	सा	सा	ध़	ध़	सा	रे
ज्ञा	S	न	क	S	र्म	के
X			2		3	

सा	सा	सा	सा	सा	रे	रे
यो	S	ग	भ	Sक्	ति	से
X			2		3	

म	म	म	सा	सा	रे	ग
पा	S	यो	भ	Sक्	ति	से
X			2		3	

ध	म	म	म	म	सांध	सां
पा	S	यो	ज	न	कल्	S
X			2		3	

ध	म	म	म	म	प	ग
ल्या	S	ण	स	म	र	स
X			2		3	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रे	रे	सा	म	म	सांध	सांरें
ला	ऽ	यो	ज	न	कल्	ऽऽ
X			2		3	

सां	ध	म	प	ग	रे	ग
या	ऽ	ण	स	म	र	स
X			2		3	

रे	रे	सा				
ला	ऽ	यो				
X			2		3	

अन्तरा

			म	म	ध	ध
			व्र	ह्	म	ऽ
X			2		3	

सां	सां	सां	ध	सां	रें	गं
ज्ञा	ऽ	न	स	ब	नि	रा
X			2		3	

रें	रें	सां	म	म	सांध	धरें
का	ऽ	र	व्र	ह्	म	ऽऽ
X			2		3	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां	–	सां	ध	सां	रें	मं
ज्ञा	S	न	स	ब	नि	रा
X			2		3	

रें	रें गं	रेंसां	रें	सां	ध	सां
का	S S	Sर	क	रु	णा	S
X			2		3	

ध	म	म	प	ग	रे	ग
सिन्	S	धु	भ	व	नि	S
X			2		3	

रे	रे	सा				
स्ता	S	र				
X			2		3	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग विलासखानी तोड़ी

स्वरालाप : सा रे नि सा रे ग – रे ग म (ग) रे ग रे – सा - सा रे ग प ध – नि ध म (ग)
रे ग प – ग प ध – सां - , रें नि ध म ग रे ग प - , ग प ध नि ध म ग रे – सा।

राग विलासखानी तोड़ी चौताल

मेरे मन माहि हरिनाम
जिन रच्यो अखिल धाम।
काम क्रोध मोह लोभ
बह्यो जात संसार।।
जिन रच्यो स्वर्ग मर्त और पाताल।
निरंजन सोई साकार निसदिन जपले श्रीमुरार ।।

(तानसेन)

स्थायी

X		0		2		0		3		4	
								रे	नि	सा	रे
								मे	रे	म	न

X		0		2		0		3		4	
ग	म	ग	म	(ग)रे	ग	रे	सा	सा	रे	ग	(रे)ग
मा	S	हि	ह	रि	ना	S	म	जि	न	र	च्यो

X		0		2		0		3		4	
प	प	प	ध	–	ध	नि	ध	म	ग	रे	रे
अ	खि	ल	धा	S	म	का	S	म	क्रो	S	ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रे	ग	(रें)ग	प	–	प	ग	प	ध	सां	–	रे
मो	S	ह	लो	S	भ	ब	ह्यो	S	जा	S	त
X		0		2		0		3		4	

अन्तरा

नि	ध	म	ग	रे	ग	रे	सा	ग	प	ध	ध
सं	S	सा	S	S	S	S	र	जि	न	र	च्यो
X		0		2		0		3		4	

सां	–	सां	(नि)ध	–	ध	ध	ध	सां	सां	–	सां
स्व	र्	ग	म	S	र्त	औ	र	पा	ता	S	ल
X		0		2		0		3		4	

ध	सां	(गं)रें	ग	रें	सां	रें	नि	ध	म	ग	ग
नि	रं	ज	S	न	S	सो	ई	सा	का	S	र
X		0		2		0		3		4	

रे	ग	(रे)ग	प	–	प	ग	प	(नि)ध	सां	रें	–
नि	स	S	दि	S	न	ज	प	ले	S	श्री	S
X		0		2		0		3		4	

नि	ध	म	ग	रे	ग	रे	सा				
मु	रा	S	S	S	S	S	र				
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भूपाल तोड़ी

स्वरालाप : सा रे ग ग प, प ध, ध सां –, रें गं रें सां ध (ध) सां (ध), ध – प – अथवा ध प ग रे रे ग, रे सा ।

राग भूपाल तोड़ी सूलताल

मोहन सृष्टि के आधार जन कौं अब राखि लीजे गोपाल। ,
नैन प्राण सुख दीजे तन ते दुख दूर कीजे।
इतनी बिनती मेरी सुन लीजे हाल।।
(तानसेन)

स्थायी

ध	–	प	प	रे	–रे	रे	ग	रे	सा
मो	ऽ	ह	न	सृ	ऽष	टि	ऽ	के	ऽ
X		0		2		3		0	

ध	सा	–	सा	ग	रे	ग	–	रे	ग
आ	धा	ऽ	र	ज	न	कौं	ऽ	अ	ब
X		0		2		3		0	

ग	–	प	ध	सां	–(सां)	ध	–(ध)	प	–
रा	ऽ	खि	ऽ	ली	ऽ	ऽ	ऽ	जे	ऽ
X		0		2		3		0	

ग	–(ग)	रे	ग	रे	–	सा	–	सा	–
गो	ऽ	ऽ	ऽ	पा	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	प	ध	ध	(ध) सां	–	–	–	–	सा
नै	ऽ	ऽ	न	प्रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ण
X		0		2		3		0	

ध	सां	रें	गं	सां	रें	गं	–	रें	सां
सु	ख	दी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	जे	ऽ
X		0		2		3		0	

गं	रें	सां	–	ध	ध	–	प	–	प
त	न	ते	ऽ	दु	ख	ऽ	दू	ऽ	र
X		0		2		3		0	

ग	ध	प	–	↘रे	↘रे	रे	ग	–	–
की	ऽ	जे	ऽ	इ	त	ऽ	नी	ऽ	ऽ
X		0		2		3		0	

ग	प	ध	सां	रें	–	सां	ध	–	प
बि	न	ती	ऽ	मे	ऽ	री	सु	ऽ	न
X		0		2		3		0	

ध	–	प	–	↗रे	↗रे	ग	रे	–	सा
ली	ऽ	ऽ	ऽ	जे	ऽ	ऽ	हा	ऽ	ल
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भैरवी

स्वरालाप : नि सा ग म ग सा रे सा - , ग म प ध प ^नि ध प – ग म ध नि सां रें सां गं ^रें सां ^नि ध – प ध नि सां ^नि ध ध प नि धपमग - , ग म प म ग रे सा - ।

सूलताल राग भैरवी

इन्दु से वदन, नैनन खंजन से।
कंठ कोकिल, वचन सुहाय।।
नासा कीर, अधर विद्रुम ।
दाड़िम दसन दमकाय।। (तानसेन)

स्थायी

ध	–	प	–	^मग	–	–	ध	प	प
इन्	ऽ	दु	ऽ	से	ऽ	ऽ	व	द	न
X		0		2		3		0	

सा	ग	प	म	ग	–	^गसा	रे	सा	–
नै	ऽ	न	न	खं	ऽ	ज	न	से	ऽ
X		0		2		3		0	

ग	–	सा	–	ध	सा	–	ग	–	ग
कं	ऽ	ठ	ऽ	को	ऽ	ऽ	कि	ऽ	ल
X		0		2		3		0	

सा	ग	प	म	^गरे	–	–	–	सा	–
व	च	न	सु	हा	ऽ	ऽ	ऽ	य	ऽ
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	म	(नि)ध	नि	सां	नि	रें	–	सा	–
ना	ऽ	सा	ऽ	की	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ
X		0		2		3		0	

नि	नि	सां	–	रें	सां	–	(नि)ध	प	प
अ	ध	र	ऽ	वि	ऽ	ऽ	द्रु	ऽ	म
X		0		2		3		0	

गं	–	रे	–	नि	–	प	नि	रें	सां
दा	ऽ	रि	ऽ	म	ऽ	ऽ	द	स	न
X		0		2		3		0	

सा	ग	ध	म	(ग)रे	–	–	–	सां	–
द	ऽ	ऽ	म	का	ऽ	ऽ	ऽ	य	ऽ
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग जौनपुरी

स्वरालाप : सा रे म प ध म प ग रे सा , म प ध नि सां , प गं रें सां - , नि सां रें नि ध प नि ध प म प ग – रे सा ।

राग जौनपुरी चौताल

जहाँ लगी लगन लगी लालन सों,
तहाँ लगी चित ललचाऊँ।
कौन मन्त्र मोहन पढ़ि डारो,
आपुन मोहन बस कर पाऊँ।। (बैजु)

स्थायी

								प	(ध)म	प	सां
								ज	S	हाँ	S
X		0		2		0		3		4	
(नि)ध	प	-	प	(धम)प	(म)ग	रे	सा	रे	नि	ध	ध
ल	गी	S	ल	ग	न	ल	गी	ला	S	ल	न
X		0		2		0		3		4	
सा	-	(म)रे	म	म	प	प	-	म	प	(नि)ध	नि
सों	S	त	S	हाँ	ल	गी	S	चि	त	ल	ल
X		0		2		0		3		4	
सां	-	(रें)नि	(रें)सां	रें	(नि)ध	प	(ध)म				
चा	S	S	S	S	ऊँ	S	S				
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

								म	प	ध	नि
								कौ	ऽ	न	ऽ
X		0		2		0		3		4	
सां	-सां	सां	(नि)ध	-	सां	सां	-	प	गं	रें	-
म	ऽन्	त्र	मो	ऽ	ह	न	ऽ	प	ढ़ि	डा	ऽ
X		0		2		0		3		4	
सां	-	(रें)नि	(रें)सां	रें	(नि)ध	-	प	प	म	प	नि
रो	ऽ	आ	ऽ	ऽ	पु	ऽ	न	मो	ऽ	ह	न
X		0		2		0		3		4	
ध	प	-	पध	(ध)मप	(म)ग	रे	सा				
ब	स	ऽ	कऽ	रऽ	पा	ऽ	ॐ				
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग शुद्धसारङ्ग

स्वरालाप : ऩि सा रे म रे ^रे सो ऩि ध़ प़ ऩि - सा -, ऩि सा रे म रे - , रे म॑ प म रे -, म॑ प नि सां ,सां नि ध प म॑ प रे म रे – म रे ऩि सा - ।

राग शुद्धसारङ्ग धमार

गोकुल राजकुमार लाल रंग भीने है।
एकन पै कंजन जेरी जराय के,
एकन पै पिचकारी हेम भराय के।।

(अष्टछाप)

स्थायी

										^मरे	म॑	प	प
										गो	S	कु	ल
X					2		0			3			

म	-	रे	रे	सा	ऩि	ध़प़	ऩि	सा	सा	^मरे	म॑	प	प
रा	S	S	ज	कु	मा	SS	S	S	र	ला	ल	रं	ग
X					2		0			3			

नि	-	ध	प	^धम॑	प	म	^मरे	^रेऩि	सा				
भी	S	S	S	ने	S	हैं	S	S	S				
X					2		0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अन्तरा

										म	रे	मं	प
										ए	ऽ	क	न
X					2		0			3			

नि	-	नि	सां	सां	-	सां	सां	रें	सां	नि	सां	(म)रें	मं
पै	ऽ	कं	ऽ	ज	ऽ	न	जे	ऽ	री	ज	रा	ऽ	य
X					2		0			3			

रें	सां	रें	सां	नि	ध	प	ध	(प)में	प	म	-	(म)रे	रे
के	ऽ	ए	क	न	ऽ	पै	पि	च	ऽ	का	ऽ	ऽ	री
X					2		0			3			

नि	सा	(म)रे	(प)में	प	म	रे	(रे)ऩि	सा	-				
हे	म	भ	रा	ऽ	य	ऽ	के	ऽ	ऽ				
X					2		0			3			

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पटदीप चौताल

स्वरालाप : सा ऩि सा ग रे ऩि – सा , प [म]ग म प नि [ध]नि

सां ध म प – , नि ध प म प ग म ग रे [सा]ऩि सा – ।

राग पटदीप चौताल

नाद विस्तार किन हूँ न पायो पार
पीछै पीछै थक हार्यो संसार।
कौन मूल कौन धूल कौन फूल कौन फल
कौन पत्र कौन डार।। (तानसेन)

स्थायी

								प	[म]ग	म	प
								ना	ऽ	द	वि
X		0		2		0		3		4	

नि	–	नि	नि[ध]	नि	सां	[नि]ध	प	प	[म]ग	[प]म	प
स्ता	ऽ	र	कि	न	हूँ	ना	ऽ	पा	ऽ	यो	ऽ
X		0		2		0		3		4	

नि	ध	प	प	[म]ग	रेसा	[म]ग	[प]म	प	–	ध	प
पा	ऽ	र	पी	ऽ	छैऽ	पी	ऽ	छै	ऽ	थ	क
X		0		2		0		3		4	

नि	ध	प	म	ग	रे	[सा]ऩि	सा				
हा	ऽ	र्यो	सं	ऽ	सा	ऽ	र				
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प	मग	म	धपे	नि	नि	नि	सां	सां	रेंनि	सां	सां
कौ	ऽ	न	मू	ऽ	ल	कौ	ऽ	न	धू	ऽ	ल
X		0		2		0		3		4	

सांनि	सां	मंगं	रें	–	सां	निध	नि	सां	निध	प	प
कौ	ऽ	न	फू	ऽ	ल	कौऽ	ऽ	न	फ	ऽ	ल
X		0		2		0		3		4	

मग	रेसा	मग	मप	ग	ग–मग	रे	रेसा				
कौ	नऽ	प	त्रऽ	कौ	नऽऽऽ	डा	ऽर				
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पटदीप सूलताल

नाद प्रणव रूप सकल गुणनिधान।
सुन्दर अति अपूर्व अनुपम अविनाशी।।
आनन्द धाम अनन्त अपार।
सकल सुख करन, सुर नर मुनि वन्दन।।
(ऋत्विक् सान्याल)

स्थायी

नि	-	सां	-	(नि)ध	ध	(प)म	म	(ध)प	प
ना	S	द	S	प्र	ण	व	रू	S	प
X		0		2		3		0	

(म)ग॒	ग॒	ग॒	सा	ग॒	ग॒	म	ग॒	रे	सा
स	क	ल	S	गु	ण	नि	धा	S	न
X		0		2		3		0	

रे	-	ऩि	सा	ग॒	ग॒	ग॒	(ग॒)(प)म	-	म
सुं	S	द	र	अ	ति	अ	पू	S	र्व
X		0		2		3		0	

ग॒	म	प	प	म	ध	प	-	प	-
अ	नु	प	म	अ	वि	ना	S	शी	S
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प	-	(म)ग॒	म	प	नि	नि	सां	-	सां
आ	ऽ	ऽ	ऽ	नं	ऽ	द	धा	ऽ	म
X		0		2		3		0	

सां	(सां मं)गं॒	-	रें	-	सां	(नि)रें	-	सा	सा
अ	नं	ऽ	त	ऽ	अ	पा	ऽ	ऽ	र
X		0		2		3		0	

नि	नि	नि	ध	नि	नि	सां	(नि)ध	(प)म	प
स	क	ल	ऽ	सु	ख	क	र	ऽ	न
X		0		2		3		0	

सां	नि	ध	प	(म ध)प	प	ग॒	-	रे	सा
सु	र	न	र	मु	नि	वं	ऽ	द	न
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भीमपलासी

स्वरालाप : <u>नि</u> सा <u>ग</u> म, प सां<u>नि</u> सां - , <u>नि</u> ध प म धप <u>ग</u> म – <u>ग</u> सा रे सा।

राग भीमपलासी सूलताल

शम्भू शरण आयो, बम-बम भोलेनाथ।
किरपा कर सब, योगी महादेव।।
भैरव त्रिशूलधर व्यालमाल साजे।
प्रेममय महेश गरलधारी शिव।।
(ऋत्विक् सान्याल)

स्थायी

<u>नि</u>	-	ध	-	प	म	ध	प	-	प
शम्	S	भू	S	श	र	ण	आ	S	यो
X		0		2		3		0	

सां	-	नि	-	ध	म	ध	प	-	प
शम्	S	भू	S	श	र	ण	आ	S	यो
X		0		2		3		0	

<u>ग</u>	म	पसां	नि	ध	म	ध	प	-	प
शम्	S	भू	S	श	र	ण	आ	S	यो
X		0		2		3		0	

सा	-	सां	<u>नि</u>	ध	म	ध	प	-	प
शम्	S	भू	S	श	र	ण	आ	S	यो
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

↗म	ग	↗म	सा	↗ग	ग	म	ग	रे	सा
बम्	S	बम्	S	भो	S	ले	ना	S	थ
X		0		2		3		0	

सा	रे	नि	सा	(म)ग	(म)ग	-	(प)म	-	म
कि	र	पा	S	क	रो	S	स	S	ब
X		0		2		3		0	

ग	रे	नि	सा	(म)ग	(म)ग	-	(प)म	-	म
कि	र	पा	S	क	रो	S	स	S	ब
X		0		2		3		0	

नि	नि	सा	-	(म)ग	(म)ग	-	(प)म	-	म
कि	र	पा	S	क	रो	S	स	S	ब
X		0		2		3		0	

ग	म	प	नि	ध	प	म	ग	रे	सा
यो	S	गी	S	म	हा	S	दे	S	व
X		0		2		3		0	

प	ध	म	प	सा	ग	म	ग	रे	सा
यो	S	गी	S	म	हा	S	दे	S	व
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	म	नि	प	नि	सां	नि	सां	-	सां
भै	ऽ	र	व	त्रि	शू	ल	ध	ऽ	र
X		0		2		3		0	

नि	ध	ध	प	नि	सां	गं	रें	-	सां
भै	ऽ	र	व	त्रि	शू	ल	ध	ऽ	र
X		0		2		3		0	

पसां	नि	सां	मंग	सारें	-	रें	सां	-	सां
व्या	ऽ	ल	ऽ	मा ऽ	ऽ	ल	सा	ऽ	जे
X		0		2		3		0	

नि	-	निरें	सारें	ध	ध	पम	प	-	प
प्रे	ऽ	म	ऽ	म	य	म	हे	ऽ	श
X		0		2		3		0	

ग	म	प	नि	ध	प	म	ग	रे	सा
ग	र	ल	ऽ	धा	ऽ	री	शि	ऽ	व
X		0		2		3		0	

सां	नि	ध	प	म	-	मग	रे	सा	सा
ग	र	ल	ऽ	धा	ऽ	री	शि	ऽ	व
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग	म	प	सां	ग	ग	रे	सा	-	सा
ग	र	ल	ऽ	धा	ऽ	री	शि	ऽ	व
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग हंसकिङ्किणी

स्वरालाप : सा नि सा ग -, ग सा ग म ^ध^ प ग ~ रे सा, म प नि सां गं रें सां -, रें नि ध प म प ग –, ग सा ग म ^ध^ प ग ~ रे ~ सा ।

राग हंसकिङ्किणी सूलताल

शिव शिव शंकर, हर हर महादेव
भोला दिगंबर गिरिजापति हर।
डम डम डमरू बाजे, रूण्डमाल साजे,
भूषण जटाजूट, त्रिलोचन देवादिदेव।।
(ऋत्विक् सान्याल)

स्थायीः

^नि^प़	प़	ऩि	ऩि	सा	–	–	सा	–	सा
शि	व	शि	व	शं	ऽ	ऽ	क	ऽ	र
X		0		2		3		0	

ग	ग	ग	ग	रे	रे	^म^ग	रे	सा	सा
ह	र	ह	र	म	हा	ऽ	दे	ऽ	व
X		0		2		3		0	

नि	सा	ग	म	प	प	म	^नि^ध	^नि^प	प
भो	ऽ	ला	ऽ	दि	गं	ऽ	ब	ऽ	र
X		0		2		3		0	

ग	म	^नि^ध	–	ग	–	ग	रे	–	सा
गि	रि	जा	ऽ	प	ऽ	ति	ह	ऽ	र
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तराः

म	प	नि	नि	सां	सां	सां	सां	–	सां
ड	म	ड	म	ड	म	रू	वा	ऽ	जे
X		0		2		3		0	

नि	सां	ग॒	–	रें	–	रें	सां	–	सां
रू	ऽ	ड	ऽ	मा	ऽ	ल	सा	ऽ	जे
X		0		2		3		0	

सां	नि॒	नि॒	नि॒	ध	ध	(सां)नि॒	ध	प	प
भू	ऽ	ष	ण	ज	टा	ऽ	जू	ऽ	ट
X		0		2		3		0	

ग	म	(नि)प	प	ग॒	ग॒	ग॒	रे	–	सा
त्रि	लो	च	न	दे	वा	दि	दे	ऽ	व
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मुलतानी

स्वरालाप : ऩि सा ग॒ मं प ग॒ ^रे^सा ऩि – , प़ ऩि सा ग॒ ^रे^सा –, ^मं^ग॒ मं प नि ^ध^प – , प ग॒ मं प नि सां – , प नि सां ग॒ ^रे^सां – , नि सां नि ^ध^प –,

मं प ग॒ मं~ ग॒ ^रे^सा ।

राग मुलतानी सूलताल

जयति सीतापति कौशल्या सुत,
कमल नेत्र मंगलकारी।
पतित उद्धारण जन दुख भंजन,
सरयू तटचारी राम निरंजन।।

(ऋत्विक् सान्याल)

नि	सांनि	^ध^प	प	प	प	मं	^ध^प	प	प
ज	यऽ	ति	ऽ	सी	ता	ऽ	प	ऽ	ति
X		0		2		3		0	

मं	प	^मं^ग॒	^मं^ग॒	मं	ग॒	ग॒	सा^रे^सा	सा	सा
कौ	ऽ	शल्	ऽ	या	ऽ	ऽ	सुऽ	ऽ	त
X		0		2		3		0	

ऩि	ऩि	सा	ग॒	सा^रे^सा	–	सा	सा	सा	सा
क	म	ल	ऽ	नेऽ	ऽ	ऽ	त्र	ऽ	ऽ
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऩि	सा	ग	म॑	प	नि	सां	(ध)प	–	ग
मं	ऽ	ग	ल	का	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ
X		0		2		3		0	

अन्तरा

प	ग	म॑	प	नि	नि	–	सां	–	सां
प	ति	त	उ	द्धा	ऽ	ऽ	र	ऽ	ण
X		0		2		3		0	

नि	नि	सां	सांग	(रें)सां	–	–	सां	–	सां
ज	न	दु	ख	भं	ऽ	ऽ	ज	ऽ	न
X		0		2		3		0	

नि	सां	ध	प	प	प	पम॑	ध	प	प
स	र	यू	ऽ	त	ट	ऽऽ	चा	ऽ	री
X		0		2		3		0	

प	–	ग	–	म॑	ग	ग	रे	सा	सा
रा	ऽ	म	नि	रं	ऽ	ऽ	ज	ऽ	न
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मुलतानी सूलताल

निर्वाणषट्कम्

मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तानि नाहं नच श्रोत्रजिह्वे नच घ्राणनेत्रे।
न च व्योमभूमिर्न तेजो न वायुः चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्।।
न च प्राणसंज्ञो नवै पञ्चवायुर् नवा सप्तधातुर्न वा पञ्चकोशाः।
न वाक्पाणिपादं न चोपस्थपायुः चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्।।
न मे द्वेषरागौ न मे लोभमोहौ न मे वै मदो नैव मात्सर्यभावः।
न धर्मो न चार्यो न कामो न मोक्षः चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्।।
न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं न मन्त्रो न तीर्थं न वेदो न यज्ञः।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्।।
न मृत्युर्न शङ्का न मे जातिभेदः पिता नैव मे नैव माता न जन्म।
न बन्धुर्न मित्रं गुरूर्नैव शिष्यः चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्।।
अहं निर्विकल्पो निराकाररूपो विभुत्वाच्च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्।
न चासङ्गतं नैव मुक्तिर्न मेयः चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्।।

(शङ्कराचार्य)

स्थायी

सा	ऩि	-	सा	-	↗ग	रे	(रे)सा	सा	-	सा
म	नो	S	बु	S	द्धिअ	हं	S	का	S	र
	X		0		2		3		0	

ऩि	-	म॑	ग	म॑	प	-	प	-	प
चि	S	त्ता	S	नि	ना	S	हं	S	ना
X		0		2		3		0	

(म॑)ग	म॑	प	नि	सां	नि	ध	प	-	प
च	S	श्रो	S	त्र	जि	ह्	वे	S	न
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मंग	मंसा	(सा)मंग	मं	प	मंग	-	रेंसा	-	प
च	S	घ्रा	S	ण	ने	S	त्रे	S	न
X		0		2		3		0	

मंग	मंग	मं	-	प	नि	-	नि	-	प
च	S	व्यो	S	म	भू	S	मि	S	र्न
X		0		2		3		0	

नि	-	सां	-	गं	गंरें	रेंसा	सां	सां	नि
ते	S	जो	S	न	वा	S	युः	S	चि
X		0		2		3		0	

सां	नि	ध	प	प	प	-	मं	ग	सा
दा	S	न	S	न्द	रू	S	पः	S	शि
X		0		2		3		0	

मं	ग	मं	-	मं(प)प	मं	ग	रेंसा	-	( )
वो	S	हम्	S	शि	वो	S	हम्	S	( )
X		0		2		3		0	

अन्तरा

प	मंग	मंग	मं	-	प	नि	-	नि	-	प
न	च	S	प्रा	S	ण	सं	S	ज्ञो	S	S
	X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि	-	सां	-	नि	रेंसां	-	सां	-	नि
वै	S	प	S	ञ्च	वा	S	युः	S	S
X		0		2		3		0	

सां	-	मंग	-	मं	गं	रें	सां	-	सां
वा	S	स	S	प्र	धा	S	तु	S	र्न
X		0		2		3		0	

नि	-	नि	-	सां	नि	ध	प	प	प
वा	S	प	S	ञ्च	को	S	शाः	S	S
X		0		2		3		0	

मंग	मंग	मं	-	प	ऩि	-	नि	-	प
वा	Sक	पा	S	णि	पा	S	दं	S	न
X		0		2		3		0	

नि	-	सां	-	गं	गंरें	गंसां	सां	सां	नि
चो	S	प	Sस्	थ	पा	S	युः	S	चि
X		0		2		3		0	

सां	नि	ध	प	प	प	-	मं	ग	सा
दा	S	न	S	न्द	रू	S	पः	S	शि
X		0		2		3		0	

मं	ग	मं	-	मं(प)प	मं	ग	रेंसा	-	( )
वो	S	हं	S	शि	वो	S	हम्	S	( )
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग श्रुतिवर्द्धनी

स्वरालाप : सा ग म ग म मं म ग सा सा ग प मं प नि प मं प नि सां , सां नि प
म ग म मं मं म ग सा ग सा -

राग श्रुतिवर्द्धनी सूलताल

शशिधर तिलक भाल, गंगा जटाधर।
कर लिये त्रिशूल रुद्र विराज राज।।
भस्म अंग छाई, गले रूण्डमाला।
भैरव त्रिलोचन हर हर जोगी साज।।
(ऋत्विक् सान्याल)

स्थायी

प	प	नि	नि	सा	सां	सां	नि	प	प
श	शि	ध	र	ति	ल	क	भा	ऽ	ल
X		0		2		3		0	

मं	प	म	–	मं	म	–	ग	सा	सा
गं	ऽ	गा	ऽ	ज	टा	ऽ	ध	ऽ	र
X		0		2		3		0	

नि	नि	सा	सा	ग	–	–	म	–	म
क	र	लि	ये	त्रि	ऽ	ऽ	शू	ऽ	ल
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	म॑	प	म॑	प	–	प	नि	प	प
रु	S	द्र	वि	रा	S	ज	रा	S	ज
X		0		2		3		0	

प	–	ग	म॑	प	नि	नि	सां	–	सां
भ	S	स्म	S	अं	S	ग	छा	S	य
X		0		2		3		0	

नि	नि	सां	–	गं	मं	गं	–	सां	–
ग	ले	रूं	S	S	ड	मा	S	ला	S
X		0		2		3		0	

सां	–	नि	प	म॑	प	–	नि	प	प
भै	S	र	व	त्रि	लो	S	च	S	न
X		0		2		3		0	

सा	सा	ग	ग	मं	–	म॑	म	ग	सा
ह	र	ह	र	जो	S	गी	सा	S	ज
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मारवा

स्वरालाप : सा ऩि ध़ ऩि रे – ग रे ऩि ध़ सा - , सा ध मं ग रे – ग मं ध - , मं नि ध - , ध नि रें – ध सां - , सां रें नि ध मं ग रे – सा ।

राग मारवा सूलताल

दसहरा मुबारक होय तुमको ।
सन्तति सम्पति सहित समझाऊँ ।।
गीत गाय गाय, आनन्द बधाये।
राजा राम रहस रहस कर जाऊँ ।।
(ऋत्विक् सान्याल)

स्थायी

ध	ध	मं	ध	मं	ग	रे	-	रे	रे
द	स	ह	रा	ऽ	मु	बा	ऽ	र	क
X		0		2		3		0	

ऩि	-	ऩि	ध़	ऩि	रे	सा	-	-	-
हो	ऽ	ये	ऽ	तु	म	को	ऽ	ऽ	ऽ
X		0		2		3		0	

सा	-	ध	ध	मं	-	-	नि	ध	ध
सं	ऽ	त	ति	सं	ऽ	ऽ	प	ऽ	ति
X		0		2		3		0	

रें	नि	ध	मं	ग	रे	-	-	सा	-
स	हि	त	स	म	झा	ऽ	ऽ	ऊँ	ऽ
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अन्तरा

ध में	-	ध	सां	-	सां	सां	नि	रें	-
गी	ऽ	त	गा	ऽ	य	गा	ऽ	य	ऽ
X		0		2		3		0	

रें	-	रें	-	नि	ध	नि	-	ध	-
आ	ऽ	नं	ऽ	द	ब	धा	ऽ	ये	ऽ
X		0		2		3		0	

ध	नि	रें	गं	रें	-	नि	ध	नि	ध
रा	ऽ	जा	ऽ	रा	ऽ	म	र	ह	स
X		0		2		3		0	

रें	नि	ध	मं	ग	रे	-	-	सा	-
र	ह	स	क	र	गाँ	ऽ	ऽ	ऊँ	ऽ
X		0		2		3		0	

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग पूरिया

स्वरालाप : रे॒ सा – ऩि ध़ ^रे ध़ ऩि – ऩि रे॒ ऩि ^ध मं ^नि ध़ ऩि – ध़ ऩि रे॒ सा – ,
ऩि रे॒ ग – , ग मं ध ^ध ग मं ~ ग – ग मं ^नि ध नि – रें॒ सां – , रें॒ सां नि ध नि
– ^धमं ध ^ध ग मं ~ ग ऩि रे॒ सा – ।

राग पूरिया सूलताल

आनन्द लोक में, रहत मगन सब।
निरहंकार निराकार होवे।।
अमूर्त मूर्त करे, असीम रूप को।
आहत अनाहत में, 'श्रुतिज्ञान' को भावे।
(ऋत्विक् सान्याल)

स्थायी

^धमं	–	मं	–	ग	^रेऩि	–	रे॒	सा	–
आ	S	नं	S	द	लों	S	क	में	S
X		2		3		0		4	

सा	सा	ऩि	ध़	ऩि	ऩि	रे॒	ग	–	ग
र	ह	त	S	म	ग	न	स	S	ब
X		2		3		0		4	

ग	मं	ध़	ऩि	^धमं	–	मं	ध	मं	–
नि	र	हं	S	का	S	र	नि	रा	S
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म॑	–	ग	ग	^रे॒^नि	–	रे॒	–	सा	–
का	ऽ	ऽ	र	हो	ऽ	ऽ	ऽ	वे	ऽ
X		0		2		3		0	

अन्तरा

म॑	^नि^ध	सां	सां	सां	–	सां	नि रें	सा	–
अ	मू	ऽ	र्त	मू	ऽ	र्त	क	रे	ऽ
X		0		2		3		0	

नि	रें	गं	रें	सां	–	नि	रें	सां	–
अ	सी	ऽ	म	रू	ऽ	ऽ	प	को	ऽ
X		0		2		3		0	

रें	नि	नि	नि	^ध^म॑	म॑	म॑	म॑	ग	–
आ	ऽ	ह	त	अ	न	ह	त	में	ऽ
X		0		2		3		0	

नि	रे॒	ग	–	ग	ग	^रे॒^नि़	रे॒	सा	–
श्रु	ति	ज्ञा	ऽ	न	को	भा	ऽ	वे	ऽ
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग यमन

स्वरालाप : ऩि रे ग – रे म॑ ग ग प म॑ ग रे सा, म॑ ग म॑ ध नि - , ध नि रें सां - , सां

नि ध म॑ ध प – प म॑ ग रे ग – ग ग रे ऩि ध़ ऩि रे ग प रे ऩि रे सा - ।

राग यमन चौताल

प्रथम नाद सरस्वती,
गणपति बुद्धिदाता।
जाकी कृपाते अनधन लछमी,
पालन करे सब जगत्राता।।

(तानसेन)

स्थायी

								नि	धप	म॑	ग
								प्र	थS	म	S
X		0		2		3		0		4	
प	–	म॑	म॑	ग रे	ग प	रे	सा	ऩि	ध़	ऩि	रे
ना	S	द	स	र	Sस्व	Sती	S	ग	ण	प	ति
X		0		2		3		0		4	
ग	–	ग	म॑ग	पम॑	ध	प	–				
बु	S	द्धि	दाS	SS	S	ता	S				
X		0		2		3		0		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

								प	मं ग	ध मं	निध
								जा	S	की	कृ
X		0		2		3		0		4	

सां	–	सां	–	नि	निरें	सां	सां	नि	रें	गं	रें
पा	S	S	ते	अ	न	ध	न	ल	छ	मी	S
X		0		2		3		0		4	

सां	निध	नि	ध	प	मंध	प	–	प	सां	नि	ध
पा	SS	ल	न	क	S	रे	S	स	ब	ज	ग
X		0		2		3		0		4	

प	मं	गरे	–	ग	गप	गरे	सा				
त्रा	S	S	S	S	SS	ता	S				
X		0		2		3					

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग यमन सूलताल

दया कर दयानी जो राग रंगत,
सों गावे उत्तम बानि।
जम्बु दुर्गा भवानी,
राग तान ताल ,
सहित सों अब होवे परम ज्ञानी।।

(तानसेन)

स्थायी

नि	नि	–	^{ध}प	प	ग	प	–	प	–
द	या	S	क	र	द	या	S	नी	S
X		0		2		3		0	

^{ग}प	^{प}म॑	–	^{ग}रे	–	रे	म॑	ग	ग	–
जो	रा	S	ग	S	रं	ग	S	त	S
X		0		2		3		0	

नि	–	रे	ग	सा	–	ऩि	–	ऩि	–
सों	S	S	S	गा	S	S	S	वे	S
X		0		2		3		0	

ऩि	रे	ग	प	^{ग}रे	–	–	–	ऩि	–
उ	S	त्त	म	बा	S	S	S	नि	S
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

में	में	नि	ध	नि	नि	नि	–	–	–
ज	म्	बु	ऽ	दु	र्	गा	ऽ	ऽ	ऽ
X		0		2		3		0	

में	ध	नि	सां	–	नि	रें	नि	रें	सां
भ	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नि	ऽ
X		0		2		3		0	

नि	–	रें	–	गं	–	रें	नि	रें	सां
रा	ऽ	ग	ऽ	ता	ऽ	न	ता	ऽ	ल
X		0		2		3		0	

नि	ध	(निरें)सां	–	नि	–	–	ध	में	प
स	हि	त	ऽ	सों	ऽ	ऽ	ऽ	अ	ब
X		0		2		3		0	

में	–	(ग)रे	–	ग	ग	प	रे	–	सा
हो	ऽ	वे	ऽ	प	र	म	ज्ञां	ऽ	नी
X		0		2		3		0	

नि	–	(ध)प	–	रे	रे	ग	(रे)ग	रे	सा
हो	ऽ	वे	ऽ	प	र	म	ज्ञा	ऽ	नी
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग यमन तीव्रा

जय जय दुर्गे माता भवानी,
जय योगिनी कालि कपालिनी।

सुर नर मुनि जन सब मानी,
असुर दलनी त्रिभुवन तारिणी।।

(ऋत्विक् सान्याल)

स्थायी

			निध	प	–मं	–ग
			जऽ	य	ऽज	ऽय
X			2		3	

प	–प	प	मं	गरे	मं ग	गप
दु	ऽर्	गे	मा	ऽऽ	ता	भ
X			2		3	

रे	–	सा	ऩि	ध़	ऩि	रे
वा	ऽ	नी	ज	य	यो	गि
X			2		3	

ग	ग	–	मं	ध	नि	निरें
गि	नी	ऽ	का	ऽ	लि	क
X			2		3	

नि	ध	प				
पा	लि	नी				
X			2		3	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

			प	मं ग	−मं	ध
			सु	र	Sन	र
X			2		3	

सां	सां	−	नि	रें	गं	रें
मु	नि	S	ज	न	स	ब
X			2		3	

सांनि	रें	सां	निरें	सां	निरेंनि	−ध
माS	S	ने	अ	सु	र	S
X			2		3	

मं	ध	प	मं	रे	ग	मं
द	ल	नी	त्रि	भु	व	न
X			2		3	

नि	ध	प				
ता	रि	णी				
X			2		3	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग सरस्वती

स्वरालाप : सा रे म॑ प म॑ रे नि ध़ सा - , रे म॑ प ध नि ध सां - , सां नि ध म॑ प – रे म॑ प ध नि ध प म॑ रे नि ध़ सा - ।

राग सरस्वती सूलताल

रंजिनी वीणापानि विद्यादायिनी,
जय वाक्वादिनी माता सरस्वती।
मधुरछन्दा हृदयानन्दा, श्वेतवरणी देवी,
मुक्ति प्रदायिनी।।

(ऋत्विक् सान्याल)

स्थायी

सां	नि	ध	प	म॑	रे	–	सानि	सा	सा
रं	S	ज	नी	वी	णा	S	पा	S	नि
X		0		2		3		0	
नि	सा	रे	म॑	प	–	म॑	ध	प	प
वि	S	द्या	S	दा	S	S	यि	S	नी
X		0		2		3		0	
म॑	प	धसां	निसां	ध	–	–	म॑	प	प
ज	य	वाS	Sक्	वा	S	S	दि	S	नी
X		0		2		3		0	
म॑	–	रे	–	नि	नि	ध	सा	–	सा
मा	S	ता	S	स	र	S	स्व	S	ती
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

प	मं रे	मं	प	पसां	नि	सां	ध	—	-
म	धु	र	ऽ	छन्ऽ	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ
X		0		2		3		0	

ध	नि	सा	नि	रें	सां	-	सां	-	-
हृ	द	या	ऽ	नं	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ
X		0		2		3		0	

नि	सां	रें	मं	रें	रें	रें	सां नि	सां	सां
श्वे	ऽ	त	व	र	णी	ऽ	दे	ऽ	वी
X		0		2		3		0	

सां	नि	प	मं	रें	मं	नि	ध	प	मं
मु	ऽ	क्ति	प्र	दा	ऽ	ऽ	यि	ऽ	नी
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग छायानट

स्वरालाप : प रे –, रे ग ग म ग रे सा –, रे ग म नि ध प
प धमप सां रें सां – रें सां निध निप मरे – ग ग
म ग रे सा – ।

राग छायानट सूलताल

जयति जय दुर्गे जग मन मोहिनी,
ज्योति स्वरूपिणी त्रिजगत नाशिनी।
त्रिशूलधारिनी मानस मोहिनी,
अम्बे जगदम्बे यामिनी रूपिनी।।
(ऋत्विक् सान्याल)

स्थायी

प	प	मरे	–	ग	म	नि	–	ध	प
ज	य	ति	S	ज	य	दु	S	र्गे	S
X		0		2		3		0	

प	प	ग	म	रे	–	–	सा	रे	सा
ज	ग	म	न	मो	S	S	हि	S	नी
X		0		2		3		0	

सा	–	निध	प	सा	सा	–	रे	–	सा
ज्यो	S	ति	S	स्व	रू	S	पि	S	नी
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा	सा	रे	ग	म	म	ग	प	–	सा
त्रि	ज	ग	त	ना	ऽ	ऽ	शि	ऽ	नी
X		0		2		3		0	

अन्तरा

प	सां	–	सां	सां	–	–	रैं	–	सां
त्रि	शू	ऽ	ल	धा	ऽ	ऽ	रि	ऽ	नी
X		0		2		3		0	

सां	–	रैं	गं	मं	रैं	–	सां	निरैं	सां
मा	ऽ	न	स	मो	ऽ	ऽ	हि	ऽ	नी
X		0		2		3		0	

प रैं	–	सां	–	नि ध	ध	प	–	म रे	–
अं	ऽ	बे	ऽ	ज	ग	दं	ऽ	बे	ऽ
X		0		2		3		0	

रे	ग	म	प	सां	–	–	निध	–	प
या	ऽ	मि	नी	रू	ऽ	ऽ	पि	ऽ	नी
X		0		2		3		0	

रे	ग	म	प	ग	म	ग	साऩि	रे	सा
या	ऽ	मि	नी	रू	ऽ	ऽ	पि	ऽ	नी
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग केदार

स्वरालाप : सा म म (ग)प – मं प ध प म – प ध प सां – रें सां सा (नि)ध
नि॒ ध प – मं प ध (प)म – प म रे – सा ।

राग केदार सूलताल

गुरु का दर्शन मंगलकारी
जनम जनम का संकटहारी।
गुरु का दर्शन सब फलदाता
जनम जनम का पाप मिटाता।।
(ऋत्विक् सान्याल)

स्थायी

सा	सा	म	ग	प	-	मं	ध	प	प
गु	रु	का	ऽ	द	ऽ	र्	श	ऽ	न
X		0		2		3		0	

म	म	रे	सा	रे	-	-	सा	-	-
मं	ऽ	ग	ल	का	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ
X		0		2		3		0	

सा	सा	(नि)ध़	प़	सा	सा	रे	सा	-	-
ज	न	म	ऽ	ज	न	म	का	ऽ	ऽ
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा	-	म	ग	प	मं	ध	प	म	-
सं	ऽ	क	ट	हा	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ
X		0		2		3		0	

अन्तरा

प	प	सां	-	सां	-	नि	रें	सां	सां
गु	रु	का	ऽ	द	ऽ	र्	श	ऽ	न
X		0		2		3		0	

सां	सां	मं	मं	रें	-	-	-	सां	-
स	ब	फ	ल	दा	ऽ	ऽ	ऽ	ता	ऽ
X		0		2		3		0	

प	प	सां	-	ध	<u>नि</u>	ध	प	-	-
ज	न	म	ऽ	ज	न	म	का	ऽ	ऽ
X		0		2		3		0	

सां	-	ध	प	म	-	रे	-	सा	-
पा	ऽ	प	मि	टा	ऽ	ऽ	ऽ	ता	ऽ
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग केदार तीव्रा

काल भय वारिणी कपालिनी,
काल रूपिणी शम्भू भामिनी।
निशुम्भ घातिनी समरवासिनी,
सुर वन्दिनी ए माँ।।
पूरहर मन मोहकारिणी,
सत्यवादिनी तत्त्वदायिनी।
आशुतोष हृदि विलासिनी ए माँ।।
(ऋत्विक् सान्याल)

स्थायी

सा	–	म	म	म	म	– $^{म}_{ग}$ (म)
का	S	ल	भ	य	वा	S
X			2		3	

प	प	प	प	–(मं)	ध	प
रि	णी	क	पा	S	लि	नी
X			2		3	

पप ⁄	सां	(नि)सां	$^{नि}$ध	(नि)	ध	प
का	S	ल	रू	S	पि	नी
X			2		3	

$_{ग}$म	ध	प	म	–(म)	रे	सा
शं	S	भु	भा	S	मि	नी
X			2		3	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सासा	साध	ध	ध	—(नि)	ध	प
निशु	म्	भ	घा	ऽ	ति	नी
X			2		3	

मं	(मंप	) प	म	—ग	ध	प
स	म	र	वा	ऽऽ	सि	नी
X			2		3	

प	पसां	सां	(सां)ध	—(नि)	ध	प
सु	ऽ	र	बं	ऽ	दि	नी
X			2		3	

मं	पमं	धप	म	—म	रे	सा
ए	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
X			2		3	

अन्तरा

प	—	प	सा	ध	सां	सां
पु	ऽ	र	ह	र	म	न
X			2		3	

सां	—	सां	सां	—नि	↘ रें	सां
मो	ऽ	ह	का	ऽ	रि	नी
X			2		3	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सां	ध	ध	सां	–	सां	सां
स	ऽ	त्य	वा	ऽ	दि	नी
X			2		3	

सांसांसां	मं रें	रें	सां	–नि	ध	प
त	ऽऽ	त्व	दा	ऽ	यि	नी
X			2		3	

म	–	मग	प	–	प	प
आ	ऽ	शु	तो	ऽ	ष	ह्व
X			2		3	

पध	सां	नि	ध	नि	ध	प
दि	ऽ	वि	ला	ऽ	सि	नी
X			2		3	

मं	पमं	सां धप	म	–म	रे	सा
ए	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
X			2		3	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग शंकरा

स्वरालाप : रे सा ऩि ऩि सा — सा ऩि रे सा ऩि रे सा ऩि रे सा,

ऩि सा ऩि ध सा ऩि ध़ प़ — प़ प़ प़ ग ऩि ध़ ऩि रे

ऩि — (सा ऩि सा ऩि) ध़ प़ – प़ ग – (प़) सा – ,

सा —— सा · सा
प़ (प़), ऩि
प़

राग शंकरा मत्तताल

राम नाम मणि दीप धरू जिह्व देहली द्वार।
तुलसी भीतर वाहेर हूँ जो चाहसि उजियार।।
(तुलसीदास)

स्थायी

														ᵖग–	प	नि-	धनिरेंसं
														रा	S	S	म
X		0		2		3		0		4		5		6		0	

नि	–	धप	–	प	–	प	धपग	(प) रेग	–	रेसा		सा	–	ऩिध़सा		ऩिध़	प
ना	S	SS	S	म	S	म	णि	S	दी	S	S	प	S	ध	S	रू	S
X		0		2		3		0		4		5		6		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि सा	पग प	(ग)प –	पनि धधनि	(ध)पधपग	(प) ग	रे सा		
जि S	S S	ह्व S	दे ह	ली S	S द्वा	S र		
X	0	2	3	0	4	5	6	0

अन्तरा

							पग-प	निधनि
							तु ल	सी S
X	0	2	3	0	4	5	6	0

सां–(नि)	सां –	सां –	सां –	गं –	गं-पं गं	रें सां	नि – निध	नि– –रें नि सां
भी S	त S	र S	वा S	हे S	र हूँ	S S	जो S	S S
X	0	2	3	0	4	5	6	0

नि ध	प प	प –पग	पग पग निध	प धग	प रेग	रें सा		
चा S	S ह	सि S	उ S	जि S	S या	S र		
X	0	2	3	0	4	5	6	0

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग शंकरा चौताल

हर हर हर भूतनाथ पशुपति योगीश्वर

महादेव पिनाकपानि।

ऊर्ध्व गगन जटा जाल,

नाचत व्योमकेश भाल,

सप्तभुवन धरत ताल,

डगमग अवनी।।

(विवेकानन्द)

स्थायी:

नि	ध	सां	नि	प	प	↗ध	ग	गप	रेग	–	सा
ह	र	ह	र	ह	र	भू	ऽ	त	ना	ऽ	थ
X		0		2		0		3		4	

सा	सा	पग	ग	प	–	नि	ध	सां	नि	–	नि
प	शु	प	ति	यो	ऽ	गी	ऽ	श्व	ऽ	ऽ	र
X		0		2		0		3		4	

ग	प	नि	सां	–	सां	नि	ध	नि	प	धग	प
म	हा	ऽ	दे	ऽ	व	पि	ना	क	पा	ऽ	नि
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अन्तरा

प	^{प}ग	प	सां	सां	सां	सां	सां	–	सां	–	सां
ऊ	र	ध्व	ग	ग	न	ज	टा	S	जा	S	ल
X		0		2		0		3		4	

सां	गं	रें	सां	–	सां	नि	$^{नि}$ध	$_{नि}$सां	नि	–	नि
ना	च	त	व्यो	S	म	के	S	श	भा	S	ल
X		0		2		0		3		4	

प	ग	प	सां	सां	सां	नि	ध	नि	प	ग	प
स	प्	त	भू	व	न	ध	र	त	ता	S	ल
X		0		2		0		3		4	

सां	नि	प	प	ग	प	$^{रे}$ग	–	–	रे	सा	–
ड	ग	म	ग	अ	व	नी	S	S	S	S	S
X		0		2		0		3		4	

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग शंकरा सूलताल

हर हर भूतनाथ पशुपति योगीश्वर,
महादेव पिनाकपानि।
गगन जटा जाल व्योमकेश भाल,
त्रिभुवन धरत ताल डगमग अवनी।।

(विवेकानन्द-संशोधित)

स्थायी

नि	ध	सां	नि	प	ग	$^{\text{ग}}$प	$^{\text{रे}}$ग	$^{\text{रे}}$सा	सा
ह	र	ह	र	भू	S	त	ना	S	थ
X		0		2		3		0	

सा	सा	ग	ग	प	$^{\text{नि}}$ध	–सां	नि	–	नि
प	शु	प	ति	यो	गी	Sश्व	व	S	र
X		0		2		3		0	

ग	प	नि	धनि	सां	–	–	–	सां	–
म	S	हा	SS	दे	S	S	S	व	S
X		0		2		3		0	

नि	ध	सां	नि	प	–	प	$^{\text{ध}}$ग	–	प
पि	S	S	S	ना	S	क	पा	–	नि
X		0		2		3		0	

अन्तरा

ग	प	सां	–	सां	सां	–	सां	–	सां
ग	ग	न	S	ज	टा	S	जा	S	ल
X		0		2		3		0	

(सां)गं	रें	सां	–	नि	$^{\text{नि}}$ध	नि	प	ग	प
व्यो	S	म	S	के	S	श	भा	S	ल
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग	प	सां	सां	नि	ध	नि	प	ग	प
त्रि	भु	व	न	ध	र	त	ता	ऽ	ल
X		0		2		3		0	

नि	नि	प	प	ग	प	रेग	रे	सा	–
ड	ग	म	ग	अ	व	नी	ऽ	ऽ	ऽ
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बिहाग

स्वरालाप : ऩि सा ग म प – ग म ग ^रे सा, नि सा म ग – ग म प नि – सां –

सां नि ^ध प मं प ग ^पम ग म प म ग – ^रेसा - ।

राग बिहाग सूलताल

मेरो मन मोहि लीन्हो, सुन्दर नैन
रैन चैन पड़त, नाहीं बनवारी।
मेरे तो एक ध्यान, तुम्हारो
तुम्हरी गति, तुमही जानो अविगतगति गिरिधारी ।।
(तानसेन)

स्थायी

नि	^ध	प	-	प	ग	म	ग	^रे	सा
मे	S	रो	S	म	S	न	मो	S	ही
X		0		2		3		0	

ऩि	-	सा	म	ग	-	-	-	-	-
ली	S	S	S	न्हो	S	S	S	S	S
X		0		2		3		0	

प	-	ग	म	ग	-	-	-रे	सा	-
सुं	S	द	र	नै	S	S	S	न	S
X		0		2		3		0	

ऩि	सा	म	ग	प	प	प	^निध	मं	प
रै	S	न	S	चै	S	न	प	ड़	त
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग	म	प	सां	नि	(ध)पे	म॑	ग	(प)म	ग
ना	S	हीं	S	ब	न	S	वा	S	री
X		0		2		3		0	

अन्तरा

ग	म	प	नि	सां	-	नि	सां	-	सां
मे	रे	तो	S	ए	S	क	ध्या	S	न
X		0		2		3		0	

नि	नि	सां	मं	गं	-	-	-रें	सां	-
तु	म्	ह्मा	S	रो	S	S	S	S	S
X		0		2		3		0	

सां	सां	नि	-	प	म॑	ग	म	ग	ग
तु	म्	ह	S	री	S	S	S	ग	ति
X		0		2		3		0	

सा	सा	म	ग	प	प	नि	ध	प	प
तु	म	ही	S	जा	S	नो	S	अ	वि
X		0		2		3		0	

ग	म	प	सां	नि	प	म॑	ग	म	ग
ग	त	ग	ति	गि	रि	S	धा	S	री
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग चलनाट

स्वरालाप : सा ग म प (प) सांनि सांनि सां - , (प) सां सांनि (सां) प (नि) (नि) (म) म - , मग मग पम म गग (नि) नि प नि (नि ग) (नि ग) (नि) सा - ।

राग चलनाट चौताल

प्यारी तेरे नैनन मीन कर लीनै है नवीने।
भौंहे कमान नीके तान, कमल मृग लज्जित भये।
मोहे कटाक्षन कीने।।

(बख्शु)

स्थायी

								मग	गम	प	पनि
								प्या	री	ते	रे
X		0		2		0		3		4	

नि	निप	प (म)	प	म	ग	ग	सा	नि	निप	(प) साॱनि	ग
नै	S	न	न	मी	न	क	र	ली	S	नै	S
X		0		2		0		3		4	

(साग)	सा	-(नि)-	(सा)ग	सानि	सा	ग	म				
है	S	S	न	वी	S	ने	S				
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

मग गम (म)निप सांनि
भौं S है क
X 0 2 0 3 4

सां -(नि) सां नि नि-निप-प सांनि सांनिसां सां सांनि सां गं गंमं
मा S न नि के ता S न क S म ल
X 0 2 0 3 4

गं सां नि नि निसां नि -प प मग म निप -सां
मृ ग ल ज्जि त भ S ये मो S हे क
X 0 2 0 3 4

नि)सां नि-प प म ग मगपम ग सा
टा Sक् ष न की SS ने S
X 0 2 0 3 4

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग भिन्नषड़ज

स्वरालाप : सा ग म - , ग म (नि)ध नि सां, सां नि ध ग म - , म ग सा ऩि ध़ ऩि सा ग म - , ग म ग सा - ।

राग भिन्नषड़ज सूलताल

त्वम् ही ब्रह्माणी, त्वम् ही रुद्राणी।
जटा विभूषिणी, जीवगति विधायिनी।।
त्वम् अपारा, विश्वसारा।
काली कपालिनी, सर्वस्वरूपिणी।।
(ऋत्विक् सान्याल)

स्थायी

सां	-	नि	ध	ध	ग	म	ग	-	सा
त्वम्	ऽ	ही	ऽ	ब्र	ऽ	ह्	मा	ऽ	णी
X		0		2		3		0	

सा	-	ध़	ऩि	सा	(म)ग	(म)ग	म	-	म
त्वम्	ऽ	ही	ऽ	रू	ऽ	ऽ	द्रा	ऽ	णी
X		0		2		3		0	

ग	म	(ध)ऩि	ध	नि	नि	-	(सां)नि	ध	ध
ज	ऽ	टा	ऽ	वि	भू	ऽ	षि	ऽ	णी
X		0		2		3		0	

ग	म	ध	नि	सां	सां	-	नि	ध	नि
जी	व	ग	ति	वि	धा	ऽ	यि	ऽ	नी
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	म	ध	नि	सां	-	-	सां	-	-
त्वम्	S	S	अ	पा	S	S	रा	S	S
X		0		2		3		0	

ध	नि	सां	मंगं	मं	गं	-	-	सां	-
वि	S	श्ध	S	S	सा	S	S	रा	S
X		0		2		3		0	

गं	सां	नि	ध	म	ध	सां	नि	-	नि
का	S	ली	क	पा	S	S	लि	S	नी
X		0		2		3		0	

ग	म	ध	नि	सां	-	-	नि	ध	नि
स	S	र्व	स्व	रू	S	S	पि	S	णी
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बागेश्री

स्वरालाप : ध़ नि़ सा (सा)म–, मग–म मनिध नि (ध), सां –, सां – रेनि सां –
नि – धसांनि ध प म म –, म म ध प(ध) (प)ध(प) मग म ग (सा)म– मग –
सा रे – गरेसारे – सा –

राग बागेश्री चौताल

प्राण धन मधुसूदन
बनवारी प्रेमानंद जगवंदन।
साचे सुरन जग में गावे
मुरली धरे अधर, आप सुख करन।। (बैजु)

स्थायी

म	मध	मग	म	–	म	म	मग	रेसा	रे	रे	सा
प्रा	S	ण	ध	S	न	म	धु	सूS	S	द	न
X		0		2		0		3		4	

सा	साध़	नि़	सा	मग	ग	म	–	ग	म	ध	नि
ब	S	न	वा	S	S	री	S	प्रे	S	मा	S
X		0		2		0		3		4	

ध	म	म	म	प	ध	मग	–	रेसा	रे	सारे	सा
नं	S	द	ज	ग	S	वं	S	दS	S	न	S
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

अन्तरा

(म)ग	–	म	ध	नि	निध	नि	सां	नि	(ग)नि	–	सा
सा	S	चे	सु	र	नS	ज	ग	मे	गा	S	वे
X		0		2		0		3		4	

नि	सां	मं	गं	रेंसां	रें	सां	सां	(सां)नि	सां	नि	ध
मु	र	ली	S	धS	S	रे	S	अ	S	ध	र
X		0		2		0		3		4	

धप	निध	नि	ध	(प)म	म	धप	ध	(म)ग	ग-रेसा	रे	सा
आS	SS	S	प	S	सु	खS	S	क	रSSS	न	S
X		0		2		0		3		4	

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बागेश्री सूलताल

हनुमान महाबली सङ्कट मोचन
मारुती नन्दन सब दुख निवारण।
जय बजरंगबली राम चरण शरण
शङ्कर कृपालु भव भय भञ्जन।।
(ऋत्विक् सान्याल)

स्थायी

सां	नि	ध	–	ध	म	गमग	रे	–	सा
ह	नु	मा	ऽ	न	म	हा	ब	ऽ	ली
X		0		2		3		0	

सा	–	ध़	ऩि	सा	ग	–	म	–	म
सं	ऽ	क	ट	मो	ऽ	ऽ	च	ऽ	न
X		0		2		3		0	

ध	प	ध	नि	ध	म	ग	म	ध	ध
मा	ऽ	रु	ति	नं	ऽ	ऽ	द	ऽ	न
X		0		2		3		0	

ग	म	ध	नि	सां	सां	–	सां	ध	नि
स	ब	दु	ख	नि	वा	ऽ	र	ऽ	ण
X.		0		2		3		0	

अन्तरा

ग	म	ध	नि	सां	–	नि	रें	सां	–
ज	य	ब	ज	रं	ऽ	ग	व	ली	ऽ
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध	नि	सांमं	गं	रें	रें	रें	रें	सां	सां
रा	S	म	S	च	र	ण	श	र	ण
X		0		2		3		0	

सां	रें	नि	सां	नि	ध	म	नि	–	–
शं	S	क	र	कृ	पा	S	लु	S	S
X		0		2		3		0	

ग	म	ध	नि	सां	–	–	सां	ध	नि
भ	व	भ	य	भं	S	S	ज	S	न
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग बागधीश्वरी

स्वरालाप : ध़ नि~ सा ग म –, म ग ~ ग ~ सा – , सा ग म ध नि ध – प ध नि़ ध [ध]ग म – , ग म ध नि~ सां गं [सां]नि सा नि ध – ,प ध नि ध[प] म म [ध]प ध [नि]ध [म]ग म ग सा ।

राग बागधीश्वरी सूलताल

जय वीरेश्वर, विवेक-भास्कर
इन्दु-निभानन, सुन्दर-
लोचन।
कान्ति सुविमल, ब्रह्म परायण
नमो नारायण श्री विवेकानन्द।।
(अज्ञात)

स्थायी

सां	सां	ध	नि	ध	ग	-	म	-	म
ज	य	वी	S	रे	S	S	श्व	S	र
X		0		2		3		0	

म	ग	-	म	ग	-	-ग	ग	सा	सा
वि	वे	S	क	भा	S	स्	क	S	र
X		0		2		3		0	

सा	-	ध़	नि	सा	ग	-	म	-	म
इं	S	दु	नि	भा	S	S	न	S	न
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध	प	ध	<u>नि</u>	ध	(ध)ग	म	<u>ग</u>	सा	सा
सुं	S	द	र	लो	S	S	च	S	न
X		0		2		3		0	

अन्तरा

ग	म	ध	<u>नि</u>	सां	सां	<u>नि</u>	<u>गं</u>	सां	सां
कां	S	ति	S	सु	वि	S	म	S	ल
X		0		2		3		0	

ध	<u>नि</u>	सां	<u>गं</u>	<u>गं</u>	-	-	(सां)<u>नि</u>	सां	सां
ब्र	S	ह्म	प	रा	S	S	य	S	ण
X		0		2		3		0	

ध	प	ध	<u>नि</u>	ध	ग	-	म	-	म
न	मो	ना	S	रा	S	S	य	S	ण
X		0		2		3		0	

म	-	ग	म	<u>ग</u>	-	-	<u>ग</u>	सा	सा
श्री	S	वि	वे	का	S	S	नं	S	द
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग आभोगी

स्वरालाप : रे ध़ सा रे ग ~ म रे सा - , ध़ सा रे ग ~ म , ग म ^सां^ध सां - , रें ध सां ध ग म , म ग रे ~ ध़ सा - ।

राग आभोगी धमार

कैसे तुम हो मूरख श्याम,
कन्हैया अनाड़ी।
अबीर गुलाल, हाथ कुमकुमा,
रंग भर मारत पिचकारी।।
(ऋत्विक् सान्याल)

स्थायी

										रे	ध़	सा	रे
										कै	से	तु	म
X					2		0			3			

ग	-	-	म	-	ध	म	ग	रे	सा	सा	रे	ग	ग
हो	S	S	मु	S	र	ख	श्या	S	म	क	S	न्है	S
X					2		0			3			

म	-	^सां^ध	सां	ध	म	ग	म	रे	सा				
या	S	अ	S	ना	S	S	S	ड़ी	S				
X					2		0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

										ग॒	म	ध	ध
										अ	बी	र	गु
X					2		0			3			
सां	-	सां	ध	सां	रें	गं॒	रें	सां	सां	रें	ध	सां	ध
ला	S	ल	हा	थ	कु	म	कु	मा	S	रं	ग	भ	र
X					2		0			3			
ग॒	म	म	म	ध	(म)ग॒	म	ग॒	(सा)रे	सा				
मा	S	र	त	पि	च	S	का	S	री				
X					2		0			3			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग चन्द्रकौंस

स्वरालाप : सा ग म ध नि सां , सां नि ध [म]ग म -, म ग [(ग)]ऩि ऩि ग सा

राग चन्द्रकौंस सूलताल

गणेश गणनायक विघ्नविनाशक
सिद्धिदाता अज्ञाननाशक ।
बुद्धि-विनायक ज्ञानदाता
मूषकवाहन प्रणतजन- पालक ।।

(ऋत्विक् सान्याल)

स्थायी :

गंसां	सां	-	-	[नि]ध	ध	नि	नि	नि	नि
गऽ	णे	ऽ	श	ग	ण	ना	ऽ	य	क
X		0		2		3		0	

ध	म	म	म	[म]ग	[म]ग	म	ग	सा	सा
वि	ऽ	घ्न	वि	ना	ऽ	ऽ	श	ऽ	क
X		0		2		3		0	

ऩि	सा	ध़	ऩि	सा	[म]ग	[म]ग	म	-	-
सि	ऽ	द्धि	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ता	ऽ	ऽ
X		0		2		3		0	

ग	म	ध	नि	सां	सां	सां	[नि]ध	[नि]ध	नि
अ	ऽ	ज्ञा	ऽ	न	ना	ऽ	श	ऽ	क
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

ग	म	ध	नि	सां	-	-	सां	-	सां
बु	ऽ	द्धि	वि	ना	ऽ	ऽ	य	ऽ	क
X		0		2		3		0	

ध	नि	सांमं	गंमं	गं	-	-	सां	सां	-
ज्ञा	ऽ	ऽऽ	नऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	ता	ऽ
X		0		2		3		0	

सां	गं	नि	सां	निध	निध	[सां]ध	नि	-	नि
मू	ऽ	ष	क	वाऽ	ऽऽ	ऽ	ह	ऽ	न
X		0		2		3		0	

ग	म	ध	नि	सां	सां	-	[नि]ध	ध	नि
प्र	ण	त	ज	न	पा	ऽ	ल	ऽ	क
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग गाङ्गेयभूषणी

स्वरालाप : सा ऩि ध – ध ऩि सा ग ऩि सा - , सा ग म - , ग म ग ऩि ग सा - , ग म ध नि सां - । सां नि ध ग म - , ग म ध नि सां गं नि सां निध प म – ग म ग ऩि ग सा - ।

राग गाङ्गेयभूषणी चौताल

प्रथम नाम गनेस को लीजिये,
जा सुमिरै होय सिद्ध काम ।
जय गिरिजानन्दन जगबन्दन लम्बोदर,
तोहि जपत आवै रिद्धि-सिद्धि होय सुख धाम।।
(बैजु)

स्थायी

								मग	म	मनि ध	नि
								प्र	S	थ	म
X		0		2		0		3		4	

ध पम	प	म	प	मग	म	ग	सा	ऩि	ध	ऩि	ऩिग
ना	S	म	ग	ने	स	को	S	ली	S	जि	S
X		0		2		0		3		4	

गसो	-	ग	-सा	मग	म	म	-	धपम	प	म	म
ये	S	जा	S	सु	मि	रैं	S	हो	S	य	S
X		0		2		0		3		4	

म	ध	ग	म	ग	-	सा	सा				
सि	S	S	द्ध	का	S	S	म				
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

								ग	म	(नि)ध	नि
								ज	य	गि	रि
X		0		2		0		3		4	
सां	-	(नि)ध	म	(नि)ध	नि	सां	-	(नि)ध	नि	(मं)गं	मं
जा	S	न	Sन्	द	S	न	S	ज	ग	ब	Sन्
X		0		2		0		3		4	
गं	सां	गं	(सां)नि	सां	(नि)ध	(म)प	म	ग	म	(नि)ध	नि
द	न	लम्	बो	S	द	S	र	ते	S	हि	ज
X		0		2		0		3		4	
सां	सां	(सां)नि	ग	सां	-	सां	(नि)ध	(प)म	प	म	म
प	त	आ	S	वै	S	रि	S	द्धि	सि	S	द्धि
X		0		2		0		3		4	
म	(म)ध	(म)ग	म	ग	-	सा	सा				
हो	य	सु	ख	धा	S	S	म				
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग वर्द्धनी

स्वरालाप : सा ग म ध नि सां – , सां $^{सां}$ नि ध (प) प म प – म – ^{म}ग ग सा – ।

राग वर्द्धनी चौताल

जागो जागो माता भवानी,
जागो जागो कुल कुण्डलिनी,
असुर दलनी ।
त्रिभुवन मोहिनी त्रिजगत जननी,
जय जय योगिनी प्रणत जन शरणी.।

(ऋत्विक् सान्याल)

स्थायी

								^{म}ग	$_{ग}$म	ग $^{नि}$ध	$_{ध}$नि
								जा	गो	जा	गो
X		0		2		0		3		4	
ध–^{पम}	प	म	–^{प}म	ग	म	^{म}ग	सा	$^{नि}$ध	ध	नि	$_{नि}$ग
मा	S	ता	Sभ	वा	S	नी	S	जा	गो	जा	गो
X		0		2		0		3		4	
(सा^{ग})सा	सा	ग	ग	^{म}ग	$_{ग}$म	म	–	^{म}ग	$_{ग}$म	ग $^{नि}$ध	ध
कु	ल	कु	S	ण्ड	लि	नी	S	जा	गो	जा	S गो
X		0		2		0		3		4	
(साग) सा		–	ग	ग	$_{ग}$^{म}ग	$_{ग}$म	–	$_{ग}$^{प}म	–	ध–$_{पम}$	प
कु	ल	S	कु	S	ण्ड	लि	S	नी	S	अ	S
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

म	-	म	ध॒	(म)ग	म	ग॒	सा				
सु	ऽ	र	द	ल	ऽ	नी	ऽ				
X		0		2		0		3		4	

अन्तरा

ध॒ (ध)	ग	म	(नि)ध॒	नि॒	नि॒ (ध॒)	(सां)नि॒	सां	सां	–(नि॒)	सां	–
त्रि	भु	ऽ	व	ऽ	न	मो	ऽ	हि	ऽ	नी	ऽ
X		0		2		0		3		4	

सा	(नि)ध॒	(नि)ध॒	नि॒	सां	सां	(सां)(मं)ग	(मं)ग॒	मं	ग॒	(ग॒)सां	सां
त्रि	ज	ऽ	ग	ऽ	त	ज	न	ऽ	नी	ऽ	ऽ
X		0		2		0		3		4	

गं	(सा)नि॒	सां	(नि)ध॒	म	म	(म)ग	(म)ग	(ग)म	म	–(ग)	–
ज	य	ऽ	ज	ऽ	य	यो	ऽ	गि	नि	ऽ	ऽ
X		0		2		0		3		4	

ध॒–(पम)	प	म	(म)प	(प)ग	(ग)म	ग॒	सा				
प्र	ण	त	ज	न	श	र	णी				
X		0		2		0		3		4	

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग दरबारी

स्वरालाप : सा ध ~ नि रे सा - , सा रे ग ~ म रे सा नि सा रे ध ~ नि प़ सा -, म प ध ~ सां नि सां ध ~ नि रें सां – सा ध ~ नि म प - , नि प ग ~ म रे नि सा ।

राग दरबारी चौताल

मुरारे त्रिभुवनपते इन्द्र सुरपते शेषनाग है फणपते।
क्षीर उदधि सलिलपते कौस्तुभपते रतनपते।
दिनकर दिननपते कमलापते।।
उडगनपते हनुमान वलिनपते।
नारदादि भक्तनपते साजन बीन मृदंगपते।।
चिरंजीवौ साह अकबर नरपते 'तानसेन' तानपते।
(तानसेन)

स्थायी

											रे
											मु
X		0		2		0		3		4	

ग	म	रे	सा	रे	सा	(नि)ध	नि	सा	रे	सा	रे
रा	S	रे	S	त्रि	भु	व	न	प	ते	S	S
X		0		2		0		3		4	

नि ध	नि	प़	सा	सा	रे	सा	–	रे	सा	रे	प
इं	S	द्र	सु	र	प	ते	S	शे	S	ष	S
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(नि)ध़	नि़	प़	ध़	नि़	सा	रे	सा	रे	ग	−	ग
ब	लि	न	प	ऽ	ते	ना	ऽ	र	दा	ऽ	दि
X		0		2		0		3		4	

(प)म	(प)म	प	प	(प)नि	(नि)प	म	प	ध	ध	(नि)ध	नि
भ	ऽक्	त	न	प	ते	सा	ऽ	ज	न	वी	ऽ
X		0		2		0		3		4	

प	प	म	प	नि	ग	म	रेसा	ध़	नि़	सा	रे
ऽ	न	मृ	दं	ऽ	ग	प	ऽऽ	ते	ऽ	ऽ	(मु)
X		0		2		0		3		4	

आभोग

सा	(सां)नि	सां	सां	−	सां	(नि)ध	ध	(सां)नि	सां	सां	सां
चि	रं	ऽ	जी	ऽ	वौ	सा	ह	अ	क	ब	र
X		0		2		0		3		4	

ध	नि	रैं	−	सां	−	(मं)रैं	सां	सां	(नि)ध	नि	प
न	र	प	ऽ	ते	ऽ	ता	ऽ	न	से	ऽ	न
X		0		2		0		3		4	

म	(नि)प	सां	−	ग	ग	म	रेसा	ध़	(सा)नि़	सा	रे
ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	प	ऽऽ	ते	ऽ	ऽ	(मु)
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग दरबारी सूलताल

शङ्कर जटाजूट, व्याघ्राम्बर शिव,
नटराज महेश, त्रिलोचल त्रिशूलधारी।
डमरू डिमक डिमक, हर कर बाजे साजे,
त्रैलोक्य विराजे, काशी के निवासी।।
(ऋत्विक् सान्याल)

स्थायी

प	प	ग	म	रे	रे	-	सा	-	सा
श	ङ्	क	र	ज	टा	ऽ	जू	ऽ	ट
X		0		2		3		0	

(म)ग	म	रे	सा	ध़	नि़	प़	सा	-	सा
व्या	ऽ	घ्र	ऽम्	ब	ऽ	र	शि	ऽ	व
X		0		2		3		0	

सा	रे	(म)ग	~	म	प	(नि)ध	~	नि	प
न	ट	रा	ऽ	ज	म	हे	ऽ	ऽ	श
X		0		2		3		0	

म	प	नि	प	(म)ग	(म)ग	म	रे	-	सा
त्रि	लो	च	न	त्रि	शू	ल	धा	ऽ	री
X		0		2		3		0	

अन्तरा

म	प	(नि)ध	~	नि	सां	नि	सां	सां	सां
ड	म	रू	ऽ	डि	म	क	डि	म	क
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग॒	–	ग॒	म	–	–	प	(म)रे	(सा)नि॒	सा	´रे	(सा)रे
ना	ऽ	ग	है	ऽ	ऽ	फ	ण	प	ऽ	ते	(मु)
X		0		2		0		3		4	

अन्तरा

सा	ध॒	ध॒	(नि)ध॒	नि॒	प	म	प	ध॒	नि॒	सा	–
क्षी	ऽ	र	ठ	द	धि	स	लि	ल	प	ते	ऽ
X		0		2		0		3		4	

रें	–	रें	रें	सां	सां	रें	सां	ध॒	(सां)नि॒	सां	–
कौ	ऽ	स्तु	भ	म	नि	र	त	न	प	ते	ऽ
X		0		2		0		3		4	

प	ग॒ंमं	रें	रें	रेंग॒ं	मं	सां	सां	(नि)ध॒	नि॒	सां	–
दि	नऽ	क	र	दीऽ	ऽ	न	न	प	ऽ	ते	ऽ
X		0		2		0		3		4	

म	प	सां	–	ग॒	–	म	रेसा	ध॒	नि॒	सा	रे
क	म	ला	ऽ	ऽ	ऽ	प	ऽऽ	ते	ऽ	ऽ	(मु)
X		0		2		0		3		4	

संचारी

रे	सा	प	प	ग॒	(ग)म	रे	रे	(ग)म	रेसा	(नि)ध॒	ध॒
स	सि	ठ	ड	ग	न	प	ते	ह	नुऽ	मा	न
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध	ध	नि	नि	रें	-	रें	सां	-	सां
ह	र	क	र	बा	ऽ	जे	सा	ऽ	जे
X		0		2		3		0	

गं	मं	रें	सां	ध	~	नि	प	-	प
त्रै	ऽ	लो	ऽ	क्य	ऽ	वि	रा	ऽ	जे
X		0		2		3		0	

सां	-	नि	प	ग	~	म	रे	-	सा
का	ऽ	शी	ऽ	के	ऽ	नि	वा	ऽ	सी
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग मियाँ की मल्हार

स्वरालाप :

सा — ↗, म↘रे म रे म रेसा— , म (म) रे म रे, नि़ध़ ↗नि़ — सा— ,

रे साऩि सा नि़ ध़ नि़ (म़) म़ प़— , म़ प़ नि़ ध़ नि ध़ नि ध़ नि़ नि़ (ध़) नि़— सा—

नि़ ध़ नि़ सा म रे म रे, म रे म रे(रे) प— मग म ग म ग म(ग) प म मरे

नि़ ध़ नि़ — सा— , म म रे म (रे) प— , म प नि ध नि (म) म प—,

नि प म ग म ग म ग म (ग) प म म रे म रे (रे) नि ध नि म मप —,

म प नि ध नि ध नि ध नि नि ध नि म मप— ,

म प नि ध नि ध नि ध नि नि ध नि— सां— , नि नि ध नि^नि सां (नि) रें—,

मं रें मं रें नि नि (ध) ध नि— सां—, रें नि सां नि ध नि म प— ,

↗नि म प (प)↗सां— नि प मग म ग म ग ↗म(ग) प म मरे म रे, सा—

राग मियाँ की मल्हार चौताल

उमड़ घुमड़ गरज गरज
बादरवा बरसन आये ।
घन गरजे घन बिजुरी चमके
जियरा अति ही डराये।।

(ऋत्विक् सान्याल)

स्थायी

						↗रें	↘नि	↗सां	↗निध	↗निम	मप
						उ	म	ड़	घुS	मS	ड़
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नि	नि	निध	नि	सां नि	सां	सां	–	ग	मग (म)	मरे	मरे
ग	र	ज	ग	र	ज	बा	ऽ	द	र	वा	ऽ
X		0		2		0		3		4	

मरे	मरे	प	प	–	प	प	–	नि	ध	नि	सां
ब	र	ऽ	स	ऽ	न	आ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
X		0		2		0		3		4	

मग	मग	म (ग)	पम–	रे	रेंसा						
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ						
X		0		2		0		3		4	

अन्तरा

						म	प	पनि ध	नि	नि	सां
						घ	न	ग	र	जे	ऽ
X		0		2		0		3		4	

सां	सां	रेंनि	नि	सां	सां	मंगं	गंमं	रें	रेंसां	सांनिनि	निध
घ	न	बि	जु	ऽ	री	च	मऽ	के	ऽऽ	जि	यऽ
X		0		2		0		3		4	

नि	सां	रें	नि	सां	निध	नि	म	प	पम	निप	सां
रा	ऽ	अ	ति	ऽ	हीऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ड	ऽ	ऽ
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

$^{\text{म}}$ग॒	$^{\text{म}}$ग॒	म (ग॒)	$^{\text{प}}$म–	रे	$^{\text{रे}}$सा						
रा	S	S	S	चे	S						
X		0		2		0		3		4	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राग ललित

स्वरालाप: ऩि रे॒ ग म म॑ म, ग म म॑ म म॑ म ग, ग म॑ ध॒ म॑, म ग म॑ ध॒ म॑ ध॒ सां - , सां रें॒ नि ध॒, म॑ ध॒ नि (ध)नि ध॒ म॑ म, ग म म॑ म ग, रे॒ ग रे॒ म॑ ग रे॒ सा - ।

राग ललित सूलताल

भज रघुकुल चंद राम सीताराम

दशरथ नंदन मारूति प्रीति राम।

सुर नर वानर त्रिभुवन वंदन

श्यामल सुंदर रमापति राम।।

(ऋत्विक् सान्याल)

स्थायी

ऩि	रे॒	ग	म	म	-	म	म॑	म	म
भ	ज	र	कु	ऽ	ल	चं	ऽ	ल	द
x		0		2		3		0	

ग	रे॒	ग	म॑	म॑	ग	-	रे॒	सा	सा
रा	ऽ	म	ऽ	सी	ता	ऽ	रा	ऽ	म
x		0		2		3		0	

सा	सा	ध॒	ध॒	ध॒	म॑	-	ध॒	-	ध॒
द	श	र	थ	नं	ऽ	ऽ	द	ऽ	न
x		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रें॒	-	नि॒	ध॒	म॑	म॑	ध॒	म॑	म	म
मा	S	रु	ति	S	प्रि	य	रा	S	म
X		0		2		3		0	

अन्तरा

म॑	ध॒	म॑	ध॒	सां	-	-	रें॒	सां	सां
सु	र	न	र	वा	S	S	न	S	र
X		0		2		3		0	

ध॒	नि	रें॒	गं	गं	रें॒	सां	सां	-	सां
त्रि	भु	व	न	वं	S	S	दि	S	त
X		0		2		3		0	

रें॒	-	नि	ध॒	म॑	-	ध॒	म॑	म	म
श्या	S	म	ल	सुं	S	S	द	S	र
X		0		2		3		0	

ग	रे॒	ग	म॑	म॑	ग	-	रे॒	सा	सा
र	S	मा	S	प	ति	S	रा	S	म
X		0		2		3		0	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुद्धि पत्र

पृष्ठ संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
20.	सिग्ध्सदन	सिद्धसदन
118.	उडगनपते हनुमान वलिनपते	ससि उडगनपते हनुमान वलिनपते
119.	अन्तरा के स्थान पर संचारी एवं संचारी के स्थान पर आभोग है.	पृ. 121 पर अन्तरा एवं संचारी को देखना है.
120.	अन्तरा के शेष भाग पृ. 121 पर नहीं है.	अन्तरा के शेष भाग पृ. 122 पर है.

43.

अशुद्ध:

ध	म	म	म	म	प	ग
ल्या	ऽ	ण	स	म	र	स
x			2		3	

शुद्ध:

ध	म	म	म	म	प	ग
या	ऽ	ण	स	म	र	स
x			2		3	

60. स्थायी

अशुद्ध:

सां	-	नि	-
शम्	ऽ	भू	ऽ
x		0	

.....

ग	म	सां	नि
शम्	ऽ	भू	ऽ
x		0	

.....

शुद्ध:

सां	-	नि	-
शम्	ऽ	भू	ऽ
x		0	

.....

ग	म	सां	नि
शम्	ऽ	भू	ऽ
x		0	

.....

अन्तरा

अशुद्ध:

ग	म	प	नि
ग	र	ल	ऽ
x		0	

.....

शुद्ध:

ग	म	प	नि
ग	र	ल	ऽ
x		0	

.....

72. अन्तरा

अशुद्ध:

प	-	ग	मं	प	नि	नि	सां	-	सां
भ	ऽ	स्म	ऽ	अं	ऽ	ग	छा	ऽ	म
x		0		2		3		0	

शुद्ध:

प	-	ग	मं	प	नि	नि	सां	-	सां
भ	ऽ	स्म	ऽ	अं	ऽ	ग	छा	ऽ	ई
x		0		2		3		0	

76. अन्तरा

अशुद्ध:

रे	नि	नि	नि	मं	मं	मं	मं	ग	-
आ	ऽ	ह	त	अ	न	ह	त	में	ऽ
x		0		2		3		0	

शुद्ध:

रे	नि	नि	नि	मं	मं	मं	मं	ग	-
आ	ऽ	ह	त	अ	ना	ह	त	में	ऽ
x		0		2		3		0	

120.

अशुद्ध:

प	प	ग	म	रे	रे	-	सा	-	सा
श	इ	क	र	ज	टा	ऽ	जू	ऽ	ट
x		0		2		3		0	

शुद्ध:

प	प	ग	म	रे	रे	सा	रे	-	रे
श	इ	क	र	ज	टा	ऽ	जू	ऽ	ट
x		0		2		3		0	

126.

अशुद्ध:

नि	रे	ग	म	म	-	म	मं	म	म
भ	ज	र	कु	ऽ	ल	चं	ऽ	ल	द
x		0		2		3		0	

शुद्ध:

नि	रे	ग	म	म	-	म	मं	म	म
भ	ज	र	घु	कु	ऽ	ल	चं	ऽ	द
x		0		2		3		0	

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पं. ऋत्विक् सान्याल हिन्दुस्तानी शास्त्रीय सङ्गीत (ध्रुपद) के सुविख्यात ध्रुपद गायक हैं। सङ्गीतशास्त्र एवं सङ्गीत-विनियोग दोनों में तादात्म्य स्थापित करने की आपकी क्षमता स्तुत्य है। प. ऋत्विक् सान्याल का जन्म 12 एप्रिल, 1953 को कटिहार, बिहार में हुआ। उनके पिता मुम्बई आई.आई.टी. के प्रो. (स्व.) बटुक सान्याल विश्ववन्दनीय दार्शनिक थे एवं माता श्रीमती (स्व.) रानु सान्याल सुविख्यात लेखिका व गायिका थी। 10 वर्ष की अल्पायु से उन्होंने ध्रुपद की शिक्षा प्रसिद्ध बीनकार एवं ध्रुपद-गायक ज़िया मोहिउद्दीन डागर तथा उस्ताद ज़िया फरीदुद्दीन डागर से प्राप्त की है। उन्होंने मुम्बई विश्वविद्यालय से एम.ए. (दर्शन), काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से एम.म्यूज़.-गायन एवं सङ्गीत-शास्त्र में प्रो. प्रेमलता शर्मा जी के निर्देशन में पी.एच.डी. उपाधि प्राप्त की। वे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में गायन विभाग के प्रोफ़ेसर, पूर्व-विभागाध्यक्ष एवं पूर्व-संकाय-प्रमुख एवं आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के 'टॉप' ग्रेड कलाकार है।

आप - केन्द्रीय सङ्गीत-नाटक-अकादमी, नई दिल्ली का पुरस्कार व सम्मान 2013, उत्तर-प्रदेश सङ्गीत-नाटक-अकादमी का पुरस्कार व सम्मान-2002, ध्रुवपद सम्मान जयपुर - 2007 तथा महाराज-विद्यामन्दिर-न्यास, वाराणसी द्वारा ध्रुपद सम्मान-1995 एवं 'लाईफ़ टाईम अचीवमेन्ट अवार्ड' - 2010 से विभूषित है।

आपको - देश-विदेश के लगभग 600 महत्त्वपूर्ण मंचों पर एकल ध्रुपद-गायन तथा उस्ताद ज़िया फरीदुद्दीन डागर के साथ युगलबन्दी में सफल ध्रुपद-गायन प्रस्तुत किया। प्रॉमिनाड कन्सर्ट-अलबर्ट हॉल लन्दन, यू.के. विश्वविद्यालय सर्किट, सङ्गीत महोत्सव डरहम, रावेना फेस्टिवल इटली, एशियन म्यूज़िक सर्किट लन्दन, एशियाई महोत्सव सियोल 1999, सार्क देशों में प्रतिनिधित्व 2002, सङ्गीत उत्सव मॉरिशस 2005, भारत-महोत्सव इज़रायल 2011, भारत-महोत्सव ब्रिसबेन, ऑस्ट्रेलिया 2013 तथा ऑस्ट्रिया, स्विट्ज़रलैन्ड, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया, स्वीडन, हॉलैण्ड, इज़रायल, इटली, ब्राज़ील, फ्रांस, क्रोएशिया, यू.एस.ए. आदि - अनेक देशों में सफल प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण का अनुभव है।

आप विगत 35 वर्षों से अनवरत देश-विदेश में ध्रुपद के पुनर्जागरण, प्रचार एवं प्रसार में सक्रिय हैं। आप भारत सरकार, आई.सी.सी.आर., राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय अनेक शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं के सम्मानित सदस्य हैं। आपके अनेक कैसेट एवं सी.डी. भारत, फ्रांस, इटली और दक्षिण कोरिया से प्रकाशित हैं। आपके राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के अनेक शोधपत्र, दो प्रमुख ग्रन्थ– Philosophy of Music (Mumbai से) एवं Dhrupad : Tradition and Performance in Indian Music (UK से) प्रकाशित हैं।

निवास :
5/6, तुलसी मानस मन्दिर कालोनी,
दुर्गाकुण्ड, वाराणसी-221005.
दूरभाष : 0542-2314375
Email - dhruvapada@gmail.com

₹ 375.00

ISBN 93-81120-05-7
978-93-81120-05-7

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi